www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पत्र

दिसम्बर २०१३

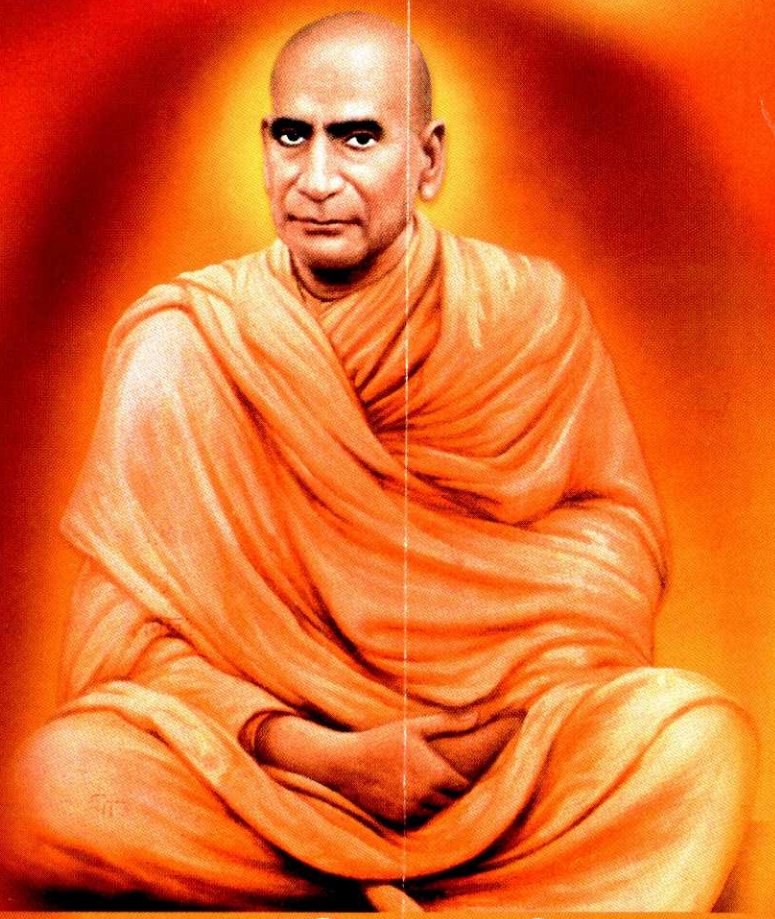

स्वामी श्रद्धानन्द जी
(२३ फरवरी १८५६ – २३ दिसम्बर १९२६)

याद आती है हमें तीन गोलियों की सलामी।
याद आती है इतिहास में है न जिसका सानी ।।
तू अमर पथ का पथिक था, अमर तेरी कहानी।
हो गया बलि देश पर, अमिट है तेरी कहानी ।।

सभा कार्यालय : दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर (महाराष्ट्र)

www.thearyasamaj.org

अभिविनय

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म् सहनाववतु सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्य्यं करवावहै। तेजस्विनावधीमस्तु मा विद्विषावहै॥
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

" तैतरीयारण्य के ब्रह्मानन्द बल्ली प्रयाठक १०/प्रथमानुवाक "

व्याख्यान — हे सहनशीलेश्वर ! आप और हम लोग परस्पर प्रसन्नता से रक्षक हों । आप की कृपा से हम लोग सदैव आप की ही स्तुति, प्रार्थना और उपासना करें तथा आप को ही पिता, माता, बन्धु, राजा, स्वामी, सहायक, सुखद, सुहृद, परमगुर्वादि जानें, क्षणमात्र भी आप को भूल के न रहें, आपके तुल्य वा अधिक किसी को कभी न जानें, आपके अनुग्रह से हम सब लोग परस्पर प्रीतिमान्, रक्षक, सहायक, परम पुरूषार्थी हों, एक दूसरे का दुःख न देख सकें, स्वदेशस्थादि मनुष्यों को अत्यंत परस्पर निर्वैर प्रीतिमान् पाखण्ड रहित करें '' सह नौ भुनक्तु'' तथा आप और हम लोग परस्पर परमानन्द का भोग करें, हम लोग परस्पर हित से आनन्द भोगें कि आप हम को अपने अनन्त परमानन्द के भागी करें, उस आनन्द से हम लोगों को क्षण भी अलग न रक्खें । ''सह वीर्य्यं करवावहै'' आप की सहायता से परमवीर्य जो सत्यविद्या उसको परस्पर परमपुरूषार्थ से प्राप्त हों ।

''तेजस्विनावधीतमस्तु'' हे अनन्त विद्यामय भगवन् ! आप की कृपादृष्टि से हम लोगों का पठनपाठन परम विद्यायुक्त हो तथा संसार में सब से अधिक प्रकाशित हों और अन्योन्यप्रीति से परमवीर्य पराक्रम से निष्कण्टक चक्रवर्ती राज्य भोंगे, हम में सब नीतिमान् सज्जन पुरूष हों और आप हम लोगों पर अत्यंत कृपा करें, जिससे कि हम लोग नाना पाखण्ड, असत्य, वेदविरूद्ध मतों को शीघ्र छोड़के एक सत्यसनातन मतस्थ हों, जिससे समस्त वैरभाव के मूल जो पाखण्ड मत, वे सब सद्यः प्रलय को प्राप्त हों ।

"मा, विद्विषाव है" और हे जगदीश्वर ! आप के सामर्थ्य से हम लोगों में परस्पर विद्वेष अर्थात् अप्रीति न रहे, जिससे हम लोग कभी परस्पर विद्वेष न करें, किन्तु सब तन, मन, धन, विद्या इनको परस्पर सबके सुखोपकार में परमप्रीति से लगावें ।

"ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः" हे भगवन्! तीन प्रकार के संताप जगत् में हैं एक आध्यात्मिक (शारीरिक) जो ज्वरादि पीड़ा होने से होता है, दूसरा आधिभौतिक जो शत्रु, सर्प, व्याघ्र, चौरादिकों से होता है, और तीसरा आधिदैविक जा मन, इन्द्रिय, अग्नि, वायु, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अतिशीत, अत्युष्णतेत्यादि से होता है । हे कृपासागर ! आप इन तीनों तापों की शीघ्र निवृत्ति करें, जिससे हम लोग अत्यानन्द में और आपकी अखण्ड उपासना में सदा रहें ।

हे विश्वगुरो ! मुझ को असत् (मिथ्या) और अनित्य पदार्थ तथा असत् काम से छुड़ा के सत्य तथा नित्य पदार्थ और श्रेष्ठ व्यवहार में स्थिर करें ।

हे जगन्मंगलमय ! सब दुःखों से मुझको छुड़ा के, सब सुखों को प्राप्त कर । (हे प्रजापते ! सुप्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन, परमैश्वरयेंण संयोजय) हे प्रजापते ! मुझ को अच्छी प्रजा पुत्रादि, हस्त्यश्व, गवादि, उत्तम पशु, सर्वोत्कृष्ट विद्या और चक्रवर्ती राज्यादि परमैश्वर्य जो स्थिर परमसुखकारक उसको शीघ्र प्राप्त कर ।

हे परमवैद्य ! (सर्वरोगात्पृथक्कृत्य नैरोग्यं देहि) सर्वथा मुझ को सब रोगों से छुड़ा के परम नैरोग्य दें । महाराजाधिराज ! जिससे मैं शुद्ध होके आप की सेवा में स्थिर होऊं ।

(हे न्यायाधीश ! कुकामकुलोभ कुमोहभय शोकालस्येर्ष्या द्वेषप्रमाद विषय तृष्णा नैष्ठुर्याभिमान दुष्टभावाविद्याभ्यो निवारय, एतेभ्यो विरूद्धेषूत्तमेषु गुणेषु संस्थापय माम्) हे ईश्वर ! कुकाम कुलोभादि पूर्वोक्त दुष्ट दोषों को कृपा से छुड़ा के श्रेष्ठ कामों में यथावत् मुझको स्थिर कर । मैं अत्यंत दीन होके यही मांगता हूं कि मैं आप और आपकी आज्ञा से भिन्न पदार्थ में कभी प्रीति न करूँ ।

हे प्राणपते, प्राणप्रिय, प्राणपितः, प्राणाधार, प्राणजीवन, सुराज्यप्रद! मेरे प्राणवाले आदि आप ही हो, मेरा सहायक आप के बिना कोई नहीं है ।

हे महाराजाधिराज! जैसा सत्य न्याययुक्त अखण्डित आपका राज्य है, वैसा न्यायराज्य हम लोगों का भी आप की ओर से स्थिर हो । आप के राज्य के अधिकारी किंकर अपने कृपाकटाक्ष से हमको शीघ्र ही कर ।

हे न्यायप्रिय! हमको भी न्यायप्रिय यथावत् कर, हे धर्माधीश! हमको धर्म में स्थिर रख ।

हे करूणामय पितः जैसे माता और पिता अपने सन्तानों का पालन करते हैं वैसे ही आप हमारा पालन करो ।।

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११३ अंक १२
सृष्टि संवत १९६०८५३११४
दयानन्दाब्द - १८९
संवत - २०७०
सन् - २०१३, दिसम्बर २०१३

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो. नं. ०९४२५१५५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ०९३७३१२११६४

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड, कृपाल चौक,
मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, नागपुर
मो. : ०९९७००८००७४

सह संपादक एवं कार्यालय मंत्री
अशोक यादव, नागपुर
मो. : ९३७३१२११६३

कार्यालय पता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर,
नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र.	लेख	लेखक	पृष्ट क्र.
१.	अभिविनय	म. दयानन्द सरस्वती	२
२.	सम्पादकीय		४
३.	महान धर्म रक्षक	प्रो. भवानीलाल भारतीय	६
४.	ब्रह्म की साधना	स्वा. श्रद्धानन्द	७
५.	क्या आर्य समाज चुनौती.....	डॉ.धर्मवीर	९
६.	लिव इन रिलेशनशिप	इन्द्रजीत देव	१२
७.	शीर्ष पर संगीन अपराधों के....	वेद प्रताप वैदिक	१४
८.	काव्य सलिला-(१) श्रद्धानन्द महान (२) मेरी तमन्ना	-डा. सुन्दरलाल कथूरिया - देवेद्रार्य	१६
९.	स्वास्थ्य चर्चा-कब्ज के 15 उपाय	डॉ.मनोहर दास अग्रावत	१७
१०.	प्राणों की ऊर्जा	डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया	१९
११.	आर्य जगत के समाचार		२१
१२.	सभा क्षेत्र की सूचनाएं व समाचार		२२

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

स्वामी श्रद्धानन्द : महर्षि के सच्चे शिष्य

गहन गर्त में से उठकर क्षितिज में देदीप्यवान होने वाली अतुलनीय विभूति स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित हैं ।

लोकोक्तियां है तथा पुस्तकों भी लिखा मिलता है कि पारस पत्थर के संसर्ग में आकर लोहा भी सोना हो जाता है । ये तो हुई सुनी सुनाई बातें । पर इतिहास में यह प्रत्यक्ष में दिखने में आता है कि मुंशीराम नामक एक सांसारिक व्यक्ति महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आकर देदीप्यमान सूर्य के भांति चमक का यहां एक कवित्री की दो पंक्तियां देख ली जाएं :-

'चमत्कार हुआ शक्ल लोहे का पारस छूआया । चमक दमक परिपूर्ण कीमति कुन्दन बनकर ही आया'' ।।

उस दिव्य विभूति में महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आने के कारण जीवन में चमत्कारी परिवर्तन हुआ उसके प्रति अपनी कृतक्षता किस प्रकार प्रगट की है यह उनकी आत्मकथा से दृष्टव्य है -

"ऋषिवर ! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे ४१ वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है । मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है । तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है । परमात्मा के बिना जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया? परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठा कर सच्चे लाभ करने के योग्य बनाया है।" (दृष्टव्य एवं पठनीय है स्वा. श्रद्धानन्द लिखित 'कल्याण मार्ग का पथिक'।)

पारस पत्थर के स्पर्श के परिणाम स्वरूप २४ कैरेट सोने के रूप में वे संसार के समक्ष आए । एक लेखक ने लिखा है 'सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ कर न केवल इनके संशय शूल फूल बन गए प्रत्युत समस्त दुर्गण, दुर्व्यसन दूर होकर इनकी नास्तिकता की भूमि पर आस्तिकता का मधुवन लहराने लगा था और आर्य समाज में आने के कारण एक नया धर्म पुरूष का जीवन प्राप्त हो गया था । आइए उनके जीवन की तारीखों पर न जाकर हम उनके व्यक्तित्व व कर्तृव्य पर एक संक्षिप्त विहगांवलोकन करें ।

पंजाब में बृहस्पति नामक बालक उत्तर प्रदेश में विभिन्न जिलों में (अपने पिता के शासकीय पुलिस अधिकारी होने के स्थानान्तरण होने के कारण) शाला तथा महा विद्यालयीन शिक्षा अर्जन करता है अपनी आत्मकथा में अनेक गुरू जनों का उल्लेख किया है वहां देखने में आता है कि उनके शिक्षकों में ग्रिफिथ जैसा बहुपठित विद्वान भी थे । ये ग्रिफिथ महोदय वहीं हैं जिन्होंने चारों वेदों का आंग्ल भाषा में अनुवाद किया था । इन्हीं दिनों बृहस्पति से मुंशीराम बने, इस युवक को महर्षि के पादरी स्काट के साथ हुए शास्त्रार्थ का प्रत्यक्ष दर्शी होने का सौभाग भी प्राप्त हुआ था । उनकी शिक्षा यद्यपि व्यवस्थित रूप न ले सकी पर उन्हें शासकीय सेवा मिलने में कोई कठिनाई नहीं थी । पर हमारे चरित्र नायक को जैसा उनने अपनी आत्मकथा में लिखा है, से ज्ञात होता है कि उन्हें चाकरी करना पसन्द नहीं था ।

अपने प्रदेश पंजाब चले गए । यहां उनका सार्वजनिक जीवन प्रारम्भ होता है । इसी दृष्टि से उन्हें वकालत करना अच्छा लगा । उन्होंने इस पेशे में पैसा भी कमाया तथा नाम भी । साथ ही आर्य समाज की इस माध्यम से सेवा की । इतिहास साक्षी है कि उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज और आर्य समाज की संस्थाओं में लगाया । अन्य गतिविधियों में न उनकी रूचि थी और न उसके लिए उनके पास समय था । मुंशीराम जी को आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान बनाया गया तो उन्होंने लिखा है "उस समय से मेरा जीवन निजी नहीं रहा''। कालान्तर में के सार्वदेशिक आ.प्र.के प्रधान भी बने और उल्लेखनीय सेवाएं दीं । पंजाब में लाहौर में लाला सांईदास के सम्पर्क में आए । वे आर्य समाज के प्रधान थे । वहीं मुंशीराम ने अपना प्रथम भाषण दिया । अपनी आत्मकथा में वे लिखते हैं " जो कुछ कहा उसका सारांश यह था कि हम सबके कर्तव्य और मन्तव्य एक होना चाहिए और इसलिए जो वैदिक धर्म एक-एक सिद्धांत के अनुकूल अपना जीवन नहीं ढाल रहा है उसे उपदेशक बनने का साहस नहीं करना चाहिए । भाड़े के टट्टुओं से धर्म का प्रचार नहीं हो सकता । इस पवित्र कार्य के लिए स्वार्थ त्यागी पुरूषों की आवश्यकता है"। हम देखते हैं कि इस विचारधारा में मुंशीराम जी ने अपने जीवन को ढाल लिया था । अंग्रेजी में कहावत है 'चेरिटी बिगन्स एट होम' उन्होंने न अपना जीवन अपितु अपनी समस्त सम्पत्ति भी आर्य समाज को अर्पित कर दी । उस त्याग के कारण ही वे बहुउद्देशीय कार्यों को करने में सफल हुए । आर्य समाज जालन्धर के वे प्रधान चुने गए । और उन्होंने न केवल जालन्धर, अपितु आसपास के क्षेत्रों में वेदों का डंका बजा दिया । वह युग आर्य समाज का स्वर्ण युग था । सुलझे हुए नेता थे परिश्रमी कार्यकर्ता थे । इन सबके नाम लिखना प्रारंभ करें तो लेख बृहत्ताकार हो जाएगा अतः इससे बचा जा रहा है । एक बात जो यहां लिखना चाहूंगा कि मुंशीराम तीव्र व पैनी दृष्टि वाले महानुभाव थे । वे घटनाओं का सामाजिक विश्लेषण करने की क्षमता रखते थे । दृष्टव्य है उनकी आत्मकथा की ये पंक्तियां "उसके पश्चात जवाहरसिंह

www.thearyasamaj.org

जी उठे । वह उस समय लाहौर आर्य समाज के मंत्री थे । यह वही भाई जवाहरसिंह थे जो पीछे आर्य समाज के नेताओं की भूल से अमृतसर के हर मंदिर के प्रबंधकर्ता बनने की धुन में आर्य समाज के शत्रु तथा अपने पूर्व गुरू ऋषि दयानन्द के निन्दक बन गए थे ।" इस प्रकार का विश्लेषण यदि लगातार होता रहता तो आर्य समाज का स्वर्ण युग अग्रसर होता रहता । मुंशीराम से महात्मा मुंशीराम बने । फिर महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बने ।

दलितोद्धार, सामाजिक समरसता तथा साम्प्रदायिक सौहार्द आदि क्षेत्रों में स्वामी जी ने जो कार्य किए हैं उनका मूल्यांकन करने वाले इतिहासकारों ने उन्हें अद्वितीय माना है । स्वामी जी समरसता के प्रतीक थे इसी कारण उन्हें जामा मस्जिद की प्राचीर से भाषण देने के लिए अवसर मिला । 'त्वम हिनः पिता....' मंत्र से प्रार्थना कर भाषण प्रारंभ किया था । डॉ. अम्बेडकर ने यह माना है "स्वा. श्रद्धानन्द अस्पृश्यों के बड़े हितचिंतक थे । उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय आदि क्षेत्रों में कार्य किया है । परन्तु दलितोद्धार क्षेत्र में जो कार्य किया वह अत्यन्त महत्व का है ।" स्मरणीय है कि उत्तर भारत के साथ ही स्वा.श्रद्धानन्द जी ने पुणे, बेंगलोर, मद्रास आदि स्थानों पर भी भ्रमण कर कार्य को आगे बढ़ाया । आर्य समाज यह मानता है कि अन्तर्जातीय विवाह होना चाहिए । इसी से समाज में समरसता आएगी । स्वामी जी ने अपनी पुत्री का विवाह अरोड़ वंशी से किया । आपने अपने पुत्रों हरिचन्द्र एवं इन्द्र के विवाह भी अन्तर्जातीय किए ।

शिक्षा के क्षेत्र में चाहे बालकों की हो या बालिकाओं की उसमें स्वामी जी का योगदान अग्रणी रहा है । जालन्धर में कन्या शाला ऐसे समय खोली गई जब कि समाज में कन्या शिक्षा का प्रबल विरोध हो रहा था । लड़कियों को पढ़ाने वालों को जाति से निकाला जा रहा था । भारत में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली लुप्त हो गई थी । स्वामी जी ने प्रारम्भ करवाई । कन्याओं के लिए कन्या गुरूकुल का शुभारम्भ आपने किया । पहले दरियागंज में स्थापित हुआ बाद में इसे देहरादून स्थानान्तरित किया गया । बाद में अनेक गुरूकुलों का शुभारम्भ आपने किया । सन् 1902 में गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की । बाद में गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार स्थानान्तरित हुआ । स्वामी जी की पत्नी का निधन हो जाने के बाद पिता तथा माता दोनों का उत्तरदायित्व सम्भाला था । इसी ममत्व की भावना से आपने गुरूकुल संचालित किया । गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार को सब कि डीमड विश्वविद्यालय है । इसकी प्रसिद्धी सारे संसार में है इस विश्वविद्यालय ने अनेक साहित्यकार, इतिहासकार, संस्कृत के विद्वानों को उत्पन्न किया है । गुरूकुल ने शिक्षा क्षेत्र में विशेषकर विज्ञान के हिन्दी भाषाओं में पाठ्यक्रम निर्धारित कर मार्गदर्शी (पाइलट) कार्य किया है गुरूकुल की प्रंशसा के सम्बन्ध में जितना लिखा जाए उतना कम ही होगा वह सब स्वामी श्रद्धानन्द जी के योगदान का ही परिणाम है ।

स्वामी जी ने साहित्य के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया है । प्रचुर साहित्य आपकी लेखनी से प्रस्फुटित हुआ । पत्रकारिता के क्षेत्र में पहले उर्दू फिर हिन्दी में सद्धर्म प्रचारक, 'श्रद्धा' व 'द लिब्रेटर' का प्रकाशन किया गया । स्वामी जी की हिन्दी के प्रति की गई सेवाओं को ध्यान में रखकर उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन सन् 1909 में अध्यक्ष निर्वाचित किया गया ।

स्वामी जी ने राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया । परन्तु वे कांग्रेस के कार्यकर्ता रहे । जलियांवाला बाग की त्रासदी के बाद अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन होना था पर कोई इसके लिए सामने नहीं आ रहा था । स्वामी जी ने स्वागताध्यक्ष के उत्तरदायित्व को सफलता पूर्वक निभाया । ब्रिटिश शासन के रोलैट एक्ट को काला कानून मानकर विरोध हो रहा था। दिल्ली में इसके विरोध में रैली निकाली गई । शासन की दमनकारी नीति से रोष उत्पन्न हुआ । गोलीयां चलाने की धमकियां दी गई । उस समय स्वा. श्रद्धानन्द जी ने अपनी छाती तान कर सिंह गर्जना कर कहा ''लो गोलियां चलावो''।

शुद्धि आन्दोलन हिन्दू धर्म व जाति पर विधर्मियों द्वारा लगातार दवाब डालकर जबरन धर्म परिवर्तन किया जाता रहा है । इसके परिणाम विकराल रूप ले रहा था । इसके विरोध में आर्य समाज की ओर से शुद्धि आन्दोलन चलाया जा रहा था । पं. लेखराम तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने इस आन्दोलन में प्राण फूंके । हम जानते है कि परिवार के परिवार, गांव के गांवों को शुद्ध करके हिन्दू धर्म में वापस लाने में बड़ी योजना बद्ध ढंग से कार्य कर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने व्यक्तित्व का परिचय दिया । इससे मुसलमानों को महसूस होने लगा कि वे जीता खेल हार रहे हैं । इस पर उन्होंने शुद्धि कराने वाले आर्यों पर हमले किए । इन हमलों में नेता पं. लेखराम जी को पहले समाप्त किया गया । बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी को भी गोलियों से भून दिया गया । देश विदेशों में इसकी भर्त्सना की गई । पर जो महानुभाव शहीद हुए उससे हिन्दू समाज की जो भी हानि हुई उसकी पूर्ति नहीं हो सकी । पर आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन से अपने आप को पीछे नहीं किया है । यद्यपि शुद्धियां हो रही हैं पर उस आन्दोलन में वह धार नहीं दीखती जो गत युग में थी । और हम परिणाम देख रहें हैं भगवान न करें पर देश एक ओर विभाजन की ओर बढ़ रहा है । साम्प्रदायिक सौहार्द तो छिन्न-भिन्न हो ही रहा है ।

स्वामी श्रद्धानन्द के अकाल बलिदान से आर्य समाज के कार्यक्रमों को क्षति पहुंची है । उसे पूरा करने में हर आर्य कार्यकर्ता को अपने गिरहवान में झांक कर देखना होगा और उसे यह संकल्प करना होगा कि उसमें सामर्थ्य के अनुसार वह जो कर सकता है वह कैसे करें ।

जयसिंह गायकवाड़

www.thearyasamaj.org

महान धर्म रक्षक, शिक्षाविद्, सद्भावना-दूत और क्रान्तिकारी थे स्वामी श्रद्धानन्द

प्रो. भवानीलाल भारतीय

स्वा. श्रद्धानन्द के सम्बन्ध में आर्य जगत् के ही नहीं बल्कि आर्य समाज से इतर अन्य इतिहास-पुरूषों ने एक कालजयी युग पुरूष कहकर पुकारा है। एक धर्म और मानवता का अद्वितीय दूत किस प्रकार कल्याण के मार्ग पर बढ़ता जाता है, स्वामीजी के जीवन की प्रत्येक घटना इसे बताती है। गाँधी ने तो उन्हें उस समय का सबसे तेजस्वी और निर्भीक योद्धा कहा। इसी प्रकार सरदार पटेल, नेता सुभाष, चन्द्रशेखर आजाद और अन्य सभी देशभक्तों ने उनके कृतित्व और व्यक्तित्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कहा जाता है, महापुरूषों का जीवन ही उनका सन्देश होता है। स्वामीजी का सारा जीवन ज्वलन्त उदाहरण है। प्रस्तुत लेख आर्य जगत् के प्रसिद्ध गवेषक, लेखक और वक्ता प्रो. भवानीलाल भारतीयजी की पुस्तक से उद्धृत है। आशा है बलिदान दिवस पर प्रस्तुत यह लेख पाठकगणों को पसन्द आएगा।

स्वयं को कल्याण मार्ग पर चलने वाला एक पथिक मानने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने जब उसी नाम से अपनी आत्मकथा लिखकर ज्ञानमण्डल काशी से 1924 में प्रकाशित कराई तो साहित्य समीक्षकों की धारणा थी कि हिन्दी में आत्मकथा लेखन का इससे अधिक उत्कृष्ट ग्रन्थ कोई अन्य नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द यद्यपि जालन्धर जिले के तलवन नामक ग्राम में जन्मे थे तथा उनकी मातृभाषा पंजाबी थी, किन्तु वे हिन्दी के सुलेखक, पत्रकार तथा राष्ट्रभाषा के हिमायती नेता भी थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भागलपुर अधिवेशन में अध्यक्ष पद पर अपना अभिभाषण देते हुए उन्होंने हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप और उसकी राष्ट्र व्यापी मान्यता का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया था। वे सफल पत्रकार भी थे। पहले उन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक 1889 में उर्दू में निकाला किन्तु यह अनुभव करने पर कि हिन्दी माध्यम का पत्र उनके विचारों को अधिक जनता तक पहुँचा सकता है, उन्होंने 1907 में इसे हिन्दी में कर दिया। उन्होंने एक अन्य पत्र साप्ताहिक 'सत्यवादी' 1904 में निकाला तथा 'श्रद्धा' नामक मासिक का प्रकाशन 1920 में किया। अपने राजनीतिक विचारों के प्रसार के लिए उन्होंने अंग्रेजी में 'दि लिबरेटर' नामक पत्र का आरम्भ किया था। यह पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सका।

स्वामी श्रद्धानन्द का आरम्भिक जीवन स्वयं उनके लिए भी सन्तोष प्रद नहीं रहा था। वे अपने माता-पिता की लाड़ली सन्तान थे। बनारस के क्वीन्स कॉलेज में उन्हें अध्ययन करने का अवसर मिला। यद्यपि वे बी. ए. तक नहीं पहुँचे, किन्तु पूरोपीय दार्शनिकों के अनीश्वरवादी दर्शन तथा अंग्रेजी के रोमांटिक उपन्यासों के अध्ययन ने उनके मस्तिक में एक विचित्र तूफान पैदा कर दिया था। उनके जीवन में उस समय प्रशान्ति तथा पूर्ण विवेक का आविर्भाव हुआ जब वे 1879 में बरेली में महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आए और उनसे अपने मन में उठने वाली शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। यही उनका वास्तविक जन्म समझना चाहिए।

कालान्तर में वकील के व्यवसाय से जुड़े लाला मुंशीराम का कार्यक्षेत्र पंजाब रहा। वे आर्य समाज के नेता, उपदेशक तथा संगठक थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रूप में वे न केवल अपने प्रान्त में अपितु सार्वदेशिक स्तर पर सर्वमान्य नेता की भूमिका में आए। स्वयं के स्वाध्याय के बल पर उन्होंने प्रतिद्वन्द्वी पौराणिक पण्डितों को शास्त्रार्थ समर में पटखनी दी और वैदिक धर्म के गौरव की स्थापना की। प्रारम्भ में वे महर्षि दयानन्द की स्मृति में स्थापित डी.ए.वी. कॉलेज की प्रबन्ध व्यवस्था में सहयोग देते रहे, किन्तु जब उन्हें यह आभास हुआ कि इस महाविद्यालय में महर्षि दयानन्द के शिक्षा विषयक आदर्शों को पूरा नहीं किया जा सकता, तो उन्होंने पुरातन शिक्षा प्रणाली को पुनरूज्जीवित करते हुए 1902 में गंगा के तटवर्ती बिजनौर जिले के कांगड़ी ग्राम के अंचल में गुरूकुल महाविद्यालय की स्थापना की और मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से प्राचीन वैदिक शास्त्रों के साथ-साथ पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था की। देश की स्वाधीनता के लिए किए गए प्रयत्नों में भी स्वामीजी का योगदान कम नहीं था। राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में प्रतिनिधि रूप में सम्मिलित होना तो उन्होंने 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में ही आरम्भ कर दिया था। गाँधीजी के अफ्रीका में किए गए आन्दोलनों से उनकी सहानुभूति थी और 1914 में महात्माजी के भारत आने पर उनका सर्वप्रथम सार्वजनिक स्वागत और अभिनन्दन गुरूकुल कांगड़ी में वहाँ के आचार्य महात्मा मुंशीराम ने ही किया था।

पं. गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक, पं. मदनमोहन मालवीय तथा लाला लाजपत राय जैसे देशमान्य नेताओं से उनके आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध आजीवन रहे। जब महात्मा गाँधी जी ने 1920 में असहयोग का प्रवर्तन किया तो स्वामीजी ने उसमें भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने दिल्ली की असहयोगी जनता का नेतृत्व किया। हिन्दू-मुसलिम एकता के प्रबल समर्थक स्वामीजी ने दिल्ली की

www.thearyasamaj.org

ब्रह्म की साधना में लगा ब्राह्मण ही सच्चा गुरु है

स्वामी श्रद्धानन्द

इमां भूमिं पृथिवीं ब्रह्मचारी, भिक्षामाजहार प्रथमो दिवं च ।
ते कृत्वा समिधावुपास्ते तयोरर्पिता भुवनानि विश्वा ।। (अथर्व ११.५.६)

अर्थ – (ब्रह्मचारी प्रथमः) ब्रह्मचारी पहले (इमाम् पृथिवीं भूमिं भिक्षाम् आजहार) इस विस्तृत भूमि को भिक्षा में आहरण करता है, (दिवं च) फिर द्युलोक को । और (समिधौ कृत्वा उपास्ते) उन दोनों को समिधा बनाकर उपासना करता है । (तयोः विश्वा भुवनानि अर्पिता) उन दोनों में सब लोक आश्रित हैं ।

मनुस्मृति में कहा है –

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते ।
वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकांचनसर्पिषाम् ।। (४/२३३)

भावार्थ : सब दानों में ब्रह्मविद्या का दान ही श्रेष्ठ है । कूप–तड़ागादि, वस्त्र – भोजनादि– सब दानों में ब्रह्मदान ही उत्तम है । जल, अन्न, गाय, भूमि, वस्त्र, तिल, सोना, घी–इन दानों से ब्रह्मविद्या के अध्यापन में भी यदि टकापंथ ही चला तो फल कुछ नहीं होगा । विद्या कोई भी हो, उसका अध्ययन ब्रह्मविद्या द्वारा तत्वज्ञान की प्राप्ति के लिए होना ही

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

जामा–मस्जिद की वेदी से मानव जाति की मूलभूत एकता का उपदेश दिया । इससे पूर्व जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद हुई अमृतसर काँग्रेस में उन्होंने स्वागताध्यक्ष पद को स्वीकार कर देशवासियों को आश्वत किया कि भारतवासी दमन और अत्याचार के आगे झुकने वाले नहीं हैं । कालान्तर में काँग्रेस की मुस्लिम–तोषिणी नीति से असहमत होकर उन्होंने हिन्दू जाति के संगठन, दलितोद्धार तथा विधर्मियों को शुद्धि द्वारा हिन्दू धर्म में पुनः प्रविष्ट कराने के आन्दोलन की गोली के शिकार होकर स्वामीजी ने अमर पद प्राप्त किया ।

स्वामी श्रद्धानन्द रचित साहित्य

1916–17 की अवधि में स्वामीजी ने आर्यधर्म ग्रन्थमाला नामक एक ग्रन्थमाला का प्रकाशन किया । इसमें छपे सभी ग्रन्थ स्वयं स्वामीजी के द्वारा लिखे गए थे । इन ग्रन्थों में पादरी लेखक जे.एन. फर्कुहर द्वारा आर्य समाज और दयानन्द पर लगाए गए आक्षेपों का उत्तर, पारसी मत और वैदिक धर्म की तुलना तथा मानव धर्म शास्त्र और शासन पद्धति आदि प्रमुख हैं । स्वामीजी 'सद्धर्म प्रचारक' आदि पत्रों में वर्षो तक वेद, उपनिषद् तथा अन्य धर्म ग्रन्थों के अंशों की व्याख्या के साथ प्रकाशित करते रहते थे । बाद में उनके ये धार्मिक प्रवचन 'धर्मोपदेश' शीर्षक से 'स्वाध्याय मंजरी' ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुए । स्वामीजी ने महर्षि दयानन्द विषयक शोध कार्य किया । 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' के तृतीयांश का उन्होंने उर्दू अनुवाद किया तथा पूना नगर में 1875 में महर्षि दयानन्द द्वारा दिए गए 'उपदेश मंजरी' शीर्षक व्याख्यानों का उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया । 'उपदेश मंजरी' के महत्व को उन्होंने विस्तार से रेखांकित किया था ।

हिन्दी की भाँति उर्दू ग्रन्थ लिख कर स्वामी श्रद्धानन्द ने इस भाषा को समृद्ध किया । वर्ण–व्यवस्था, क्षात्रधर्म, यज्ञ के मन्त्रों की व्याख्या, अछूतोद्धार, नियोग प्रथा का औचित्य आदि उनके उर्दू ग्रन्थ 'कुलियात संन्यासी' शीर्षक से छपे थे । पौराणिक पण्डित गोपीनाथ द्वारा 'सद्धर्म प्रचारक' के सम्पादक व प्रकाशक पर चलाए गए मानहानि के मुकदमों के विवरण को उन्होंने उर्दू में छपवाया तथा 'दुखी दिल की पुरदर्द दास्ताँ' लिखकर आर्य समाज विषयक अपने अनुभवों को व्यक्त किया । हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद, और खुफिया जिहाद, तथा मुहम्मदी साजिश का इन्कशाफ आदि उनकी उर्दू कृतियाँ तत्कालीन साम्प्रदायिक मनोवृत्ति वाले लोगों का पर्दाफाश करती हैं ।

अंग्रेजी भाषा पर स्वामीजी का असाधारण अधिकार था । The future of the Arya Samaj, Hindu Sanghathan, Saviour of the Dying Nation आदि उनकी अंग्रेजी की प्रमुख कृतियाँ हैं । Inside Congres उन राजनीतिक लेखों का संग्रह है जो उन्होंने काँग्रेस में रहकर की गई देश सेवा तथा तज्जन्य कड़वे–मीठे अनुभवों से सम्बन्धित हैं । The Arya samaj and its Detractors, A Vindication में पटियाला में आर्य समाजियों पर चलाए गए उस अभियोग का विस्तृत वर्णन है जो उस रियासत के राजा ने ब्रिटिश नौकरशाहों के कहने में आकर चलाया था । यह ग्रन्थ आचार्य रामदेव के सहलेखन में लिखा गया था । तत्कालीन गोरी सरकार के प्रति आर्य समाज की नीति को इस ग्रन्थ में सतर्क ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

'आर्य सन्देश' से साभार

www.thearyasamaj.org

श्रेयष्कर है और उस ब्रह्मविद्या का सौदा नहीं हो सकता । उसका निष्कामना से दान ही हो सकता है । जो टकों के बदले पढ़ाता है वह टीचर हो, प्रोफेसर कहलाए, प्रिंसीपल भी प्रसिद्ध हो, परन्तु वह आचार्य नहीं बन सकता । आचार्य बनने के लिए पहला स्वाभाविक गुण यह होना चाहिए कि निष्कामना की पराकाष्ठा पर पहुँच जाए । धन कमाने वाला बनिया आचार्य नहीं बन सकता, शारीरिक दण्ड देने वाला क्षत्रिय भी आचार्य नहीं बन सकता, फिर शूद्र का तो कहना ही क्या है । आचार्य बनने के लिए ब्राह्मण का ही अधिकार है, और ब्राह्मण की वेद में शरीर के मुख भाग से उपमा दी है । उस भाग में प्राण है जो सारे शरीर को अपने दान से पुष्ट रखता है । प्राण की महिमा इसीलिए बहुत अधिक बताई गई है । उपनिषदों से आगे बढ़कर अथर्ववेद तक में प्राण की बड़ी प्रशंसा है । यहाँ तक कहा गया है कि सारे ब्राह्मण का आधार प्राण ही है –

प्राणस्येदं वशे सर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम् ।
मातेव पुत्रान् रक्षस्व श्रीश्च प्रज्ञां च विधेहि न इति ।।

माता जैसे सन्तान की रक्षा करती है वैसे ही प्राण शरीर के सब अंगों तथा प्रत्यंगों की रक्षा करता है । इसी प्रकार मनुष्य–समाज रूपी पुरुष की बनावट में ब्राह्मण ही आचार्य हो सकता है । ब्राह्मण यद्यपि दूसरों की कमाई का अन्न–जल ग्रहण करके पलता है तथापि मनुस्मृति में सब–कुछ (जो भी संसार में हैं) ब्राह्मण का ही बतलाया है–

'सर्वस्वं ब्राह्मणस्येदं यत्किंचिज्जगतीगतम्'।

और फिर कहा है–

स्वमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति च ।
आनृशंस्याद् ब्राह्मणस्य भुञ्जते हीतरे जनाः।। (१/१०२)

ब्राह्मण भोजन करे, पहने या दे, सो सब ब्राह्मण का अपना ही है । दूसरे लोग जो भोजनादि करते हैं, वह केवल ब्राह्मण की कृपा है ।

सारा संसार ब्राह्मण के दान से ही पलता है । उस दानशील श्रेष्ठ ब्रह्मण आचार्य से ब्रह्मचारी पहली भिक्षा में प्रत्यक्ष, विस्तृत भूमि का ज्ञान प्राप्त करता है । **तृण से लेकर पृथिवीपर्यन्त तक का ज्ञान आचार्य पहले देता है । वह एक समिधा हुई । परन्तु एक हाथ से ताली नहीं बजती । दो के बिना पूर्ति नहीं होती । पृथिवी प्रत्यक्ष है, इन्द्रियग्राह्य है परन्तु उसके अन्दर के रहस्य बिना विशेष प्रकाश के समझ में नहीं आते । तब आचार्य ब्रह्मचारी को परोक्ष ज्ञान देता है । पृथिवी से उसको 'द्युलोक' में ले जाता है ।** भौतिक सूर्य से लेकर आत्मा तक के प्रकाश देने वाले, प्रकाशस्वरूप तक ले जाता हुआ आचार्य शिष्य के लिए शिक्षा पूरी कर देता है । इस परिशिष्ट दान को प्राप्त करके ब्रह्मचारी समित्पाणि होकर गुरु के दरबार की ओर चलता है, क्योंकि आचार्य से मिली भिक्षा भी निन्दनीय नहीं वह भी सराहनीय है, कल्याणकारी है। परन्तु 'सःपूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्' उस गुरुओं के भी गुरु, पूर्व आचार्यों के भी आचार्य जिसके लिए भूत और भविष्यत् कोई अस्तित्व नहीं रखता– उस परम गुरु से भिक्षा प्राप्त किए बिना ब्रह्मचारी अपने परम उद्देश्य को प्राप्त नहीं होता । आचार्य से प्राप्त किया हुआ दान उसे अगले दान का अधिकारी मात्र बनाता है । पृथिवी और द्यौ के ज्ञान रूपी दो समिधाओं पर सब लोक आश्रित हैं । वहाँ पहुँच कर ब्रह्मचारी सब देवों, प्रकाशकों, ब्रह्माण्ड को चलाने वाली शक्तियों को एक ही वीणा की तार बनी हुई, एक ही स्वर से अलापते सुनता है । वहाँ पहुँच कर द्वन्द्व से मुक्त होता है और अपने आचार्य के लिए सच्चे धन्यवाद का भाव उसके हृदय में उत्पन्न होता है ।

संसार सच्चे आचार्यों के बिना पीड़ित हो रहा है । उसका अशान्त हृदय सच्चे पथ–दर्शकों के बिना व्याकुल हो रहा है परन्तु उधर से आशाजनक शब्द भी सुनाई देता है । **शिकायत यह है कि अच्छे विद्यार्थी नहीं मिलते । किन्तु शिकायत करने वाले यह भूल जाते हैं कि सच्चे आचार्य दुर्लभ हो गए हैं । जिस वेद का उपदेश ऊपर दिया गया है, उस वेद का प्रचार जिस देश में होता था और जिसके आचार्यों के चरणों में बैठकर सदाचार की शिक्षा लेने अन्य देशों के लोग आते थे, उसी देश में जब आचार्यों का अभाव है तो और किसी स्थान से क्या आशा हो सकती है!** नवीन ट्रेनिंग कॉलेज ऐसे आचार्य उत्पन्न करने में अशक्त हैं जहां दिन–रात आचार्यों के वेतन बढ़ाने का प्रश्न उठाकर बनियों का सा सौदा किया जाता है, उन शिक्षणालयों से आशा रखना व्यर्थ है । हे परमगुरो! तुम्हीं अपने शिक्षणालयों के अन्दर इस देव–निर्मित भूमि के विद्वानों को खींच लो, जिससे वे सांसारिक कामनाओं पर विजय प्राप्त करें और ब्रह्मविद्या का दान देने की शक्ति धारण करके विस्तृत भूमि और प्रकाश की शक्तियों की समिधा ब्रह्मचारियों के हाथों में देकर उन्हें विविध शक्तियों के एकत्र करने के लिए केन्द्र बना सकें ।

ऋषि मिलन स्मारिका.. से -साभार

www.thearyasamaj.org

क्या आर्यसमाज चुनौती स्वीकार करेगा?

डॉ. धर्मवीर

देश में आर्यसमाज का संगठन किसी प्रकार की राजनीतिक चुनौती की स्वीकार करने की स्थिति में नहीं है । उसका संगठन अनेक भागों में विभाजित है अन्तर्कलह से ग्रस्त उसकी संस्थायें प्रायः निष्क्रियता की स्थिति तक पहुँच गई हैं । उसके पास कार्यकर्ता भी नहीं हैं । विद्वानों शोधकर्त्ताओं के निर्माण करने वाले वे स्थान प्रायः आधुनिक शिक्षा पद्धति के प्रवाह में बह गये हैं । अतः आर्यसमाज का संगठित प्रचार तन्त्र भी नहीं है । जो भी कार्यकर्त्ता हैं वे अधिकांश में व्यक्तिगत स्तर पर ही प्रचार-कार्य में लगे दिखाई देते हैं । इस सबका मूल कारण है हमारे विचारों का समाजीकरण न होना । हमारे विचार कितने भी महत्त्वपूर्ण और अच्छे क्यों न हों, वे व्यक्तिगत विचार बनकर रह गये हैं, जिसके परिणाम स्वरूप समाज के हित के लिए, प्रचार-प्रसार के लिए जो भी कार्य किया जाता है, वह कितने भी बड़े रूप में प्रारम्भ हो परन्तु वह सब उस व्यक्ति के साथ समाप्त हो जाता है जिसने उसे प्रारम्भ किया है । गुरूकुल शिक्षा पद्धति, उपदेशक विद्यालय, वैदिक शोध, प्रचार तन्त्र सभी कुछ बना परन्तु वह व्यक्ति का कार्य बनकर रह गया । ये विचार-योजना-कार्य संस्था, संगठन या समाज के विचार नहीं बन सके, अतः वे सब कार्य धीरे-धीरे समाप्त हो गये ।

यह आर्यसमाज के संगठन का पक्ष है परन्तु इसमें जो आज भी इसको जीवित रखने वाला पक्ष है-आर्यसमाज का विचार पक्ष, इसका सिद्धान्त पक्ष, यह आर्यसमाज की आत्मा है । आत्मा मरता नहीं है इसलिए संगठन का शरीर मर भी जाये तब भी यह आत्मा इसको पुनर्जीवित कर सकता है । शरीर तो मरने के लिए ही उत्पन्न होता है । आत्मा के न रहने पर प्राणी का शरीर मरता ही है, परन्तु आत्मा के रहते शरीर फिर भी बन सकते हैं, आत्मा शरीर में आ जाये तो मुर्दा भी जीवित हो जाता है । अतः समाज की कितनी भी विकट और विषम दशा क्यों न हो उसके जीवित होने में सन्देह नहीं है । इसमें महत्त्वपूर्ण ध्यान देने योग्य तथ्य है कि जो विचार आर्यसमाज की आत्मा है वही विचार इस देश की भी आत्मा है । इस देश को जीवित रखने के लिए इसके इन विचारों का भी जीवित रहना आवश्यक है । हमने अपने स्वार्थ और अज्ञान के कारण इन विचारों के प्रचार-प्रसार से स्वयं को वंचित कर रखा है । परिणाम स्वरूप इस देश का पतन हुआ, देश पराधीन हुआ । पुनः आज देश पतन की ओर जा रहा है, उसमें केवल हमारा अज्ञान और हमारी अकर्मण्यता ही कारण नहीं हैं, इसमें इस देश के शत्रुओं का भी भारी योगदान है । जिस देश की जनता नहीं जानती, परन्तु इस देश का तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग थोड़े से स्वार्थवश इस देश का अहित करने में लगे हुए हैं ।

देश केवल भूगोल और जनसंख्या का नाम नहीं होता, देश का अपनी अस्मिता से पहचाना जाता है । भारत राजनैतिक व भौगोलिक दृष्टि से कुछ अंशों में स्वतन्त्र हुआ परन्तु अस्मिता की दृष्टि से हम अपने को अधिक पराधीन होता हुआ अनुभव करते हैं । देश पराधीन हुआ सत्ता-सम्पत्ति पर विदेशियों ने अधिकार किया परन्तु धर्म, दर्शन, संस्कृति बची रही । इस देश में जो आक्रमणकारी आये वे अपने साथ अपनी संस्कृति, धर्म को भी लाये । उसे फैलाने का यत्न किया परन्तु इस कार्य में बहुत अधिक सफल नहीं हुए । अंग्रेजों ने सत्ता के साथ संस्कृति को नष्ट करना इस देश पर राज्य करने के लिए आवश्यक है, इस तथ्य को पहचाना तथा उसे इस देश में क्रियान्वित करने का प्रयास किया यह प्रयास पराधीनता के समय से अधिक स्वाधीनता के समय में सफल हुआ । भारत की सांस्कृतिक सम्पत्ति और सामर्थ्य जिससे पराधीन देश की जनता ने सम्भाल कर रखा था, उसको नष्ट करने का षडयन्त्र पूरे विश्व द्वारा होने लगा । इसे योजानाबद्ध रूप से इस देश में लागू किया गया, जिसके परिणाम आज हमारे सामने हैं ।

इस्लाम के नाम पर भारत का विभाजन करके पाकिस्तान बनाया गया, परन्तु इस्लाम इतने से सन्तुष्ट नहीं हुआ । सारे भारत को इस्लाम झण्डे के नीचे लाने का प्रयत्न इस देश में निरन्तर बढ़ते हुए हम देख रहे हैं । जिहाद के नाम पर इस देश की जनता का धर्म बदला जा रहा है । इस्लाम के सिद्धान्तों का प्रचार करके, प्रलोभन देकर, बलपूर्वक जहाँ, जैसी परिस्थिति है, वैसे इस प्रयोजन का सफल किया जा रहा है । इस कार्य में विश्व की अनेक शक्तियाँ सम्मिलित रूप से कार्य कर रही हैं । साम्यवाद की धारा विश्व में कमजोर दिखाई

www.thearyasamaj.org

देती है, परन्तु मार्क्सवाद, माओवाद, नक्सलवाद के नाम पर हमारे देश में निरन्तर सक्रिय है । इनका उद्देश्य समाज में विभाजन करना, सत्ता से विद्रोह करना, परम्परागत विचारों के प्रति स्थानीय लोगों के मन में घृणा उत्पन्न करना है । विदेशों में अफ्रीका, अमेरिका, योरोप में अध्ययन, शोध एवं शिक्षा के नाम पर यहाँ के लोगों में परस्पर वैमनस्य उत्पन्न करने के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों में अध्ययनपीठ स्थापित किये गये हैं, जिनमें भारतीय समुदाय में परस्पर विरोध उत्पन्न करने का कार्य किया जाता है । इस्लाम की सहायता के लिए हमारा पड़ौसी पाकिस्तान और विश्व के इस्लामिक देश तत्पर हैं तो माओवाद, मार्क्सवाद के नाम पर इस देश को खण्डित करने के लिए चीन निरन्तर प्रयत्नशील है । इन दोनों शक्तियों ने भारत को पाक इस्लामिक तथा लाल गलियारे के रूप में इस देश के विभाजन की रूप रेखा बनाकर उस पर कार्य करना प्रारम्भ किया हुआ है । इसके परिणाम स्वरूप देश पर जिहादी हमले और नक्सलवादी हिंसा की घटनायें निरन्तर बढ़ रही हैं । बाहर से किये जाने वाले इस आक्रमण में जब तक देश के अन्दर रहने वाली जनता का सहयोग न मिले तो बाहरी शक्तियाँ सफल नहीं हो सकती । इसके लिये एक बड़ी योजना को इसाई चर्च और इस्लामिक शक्तियाँ कार्यान्वित करने में लगी हैं । प्रथम है द्रविड़ जो इस देश के लोगों में विभाजन के लिए कल्पित किया गया । इसमें शिक्षा, समाचार-पत्र, व्याख्यान, चर्चा, प्रचार के माध्यम से समझाया जाता है, भारत के मूल निवासी, द्रविड़ लोग हैं जो काले, चपटी नाक वाले, छोटे कद के होते हैं । इनकी भाषा तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम है । उत्तर भारत के हिन्दी संस्कार से जुड़ी भाषा बोलने वाले ऊँची नाक, गोरे रंग, लम्बी कद-काठी वाले लोग इस देश में बाहर से आये हैं । इन्होंने इस देश में रहने वाले काले लोगों को हराकर इस देश में सत्ता पर अधिकार किया है । यह सिद्धान्त अंग्रेजों ने गढ़ा इसे खूब प्रचारित किया, विद्वानों ने इसे गलत सिद्ध भी कर दिया । परन्तु भारत के विभाजन के लिये यह विचार अत्यन्त उपयोगी और सफल है इसलिए इसे बार-बार प्रचारित किया जाता है । इससे इस देश की जनता आर्य, द्रविड़ तथा दक्षिण उत्तर में विभाजित हो जाती है । इससे देश में वैमनस्य पैदा कर वर्ग संघर्ष को बढ़ावा दिया जा रहा है । इस प्रकार भारत की संस्कृति को आर्य संस्कृति और द्रविड़ संस्कृति के नाम पर बांटकर शोध और अध्ययन किये जा रहे हैं उन्हें बड़े तन्त्र के माध्यम से प्रचारित किया जाता है । आन्तरिक विभाजन का दूसरा बड़ा आधार है, जातीय विभाजन, जाति के नाम पर प्रत्येक जाति को दूसरी जाति से लड़ाने से परस्पर विरोध उत्पन्न करने का कार्य योजनाबद्ध रूप से किया जा रहा है । भारत में मध्यकाल में जन्मगत व्यवसायों के कारण जातियों का निर्माण हुआ । अशिक्षा अज्ञान से दूर व्यवस्था में दोष भी आये । इनमें ऊँच-नीच का भाव, बड़े-छोटे का भाव उत्पन्न किया गया, परन्तु यह इतना बड़ा और घातक नहीं थी कि वह समाज या देश के विभाजन का कारण बनता परन्तु आज अमेरिका, यूरोप और इस्लाम ने इन जातियों को आधार बनाकर देश के विभाजन का नक्शा तैयार कर दिया है । द्रविड़ के नाम पर द्रविड़ प्रदेश की मांग की जा रही है । वहीं लोगों को दलितस्तान का नक्शा बनाकर उनको देश के विरूद्ध खड़ा किया जा रहा है । कुर्ग कुर्गिस्तान की मांग खापर्डे, कांशीराम, वामन मेश्राम जैसे लोग इस सिद्धान्त पर.....देश विचारों के कारण एक बना रहा । दलित मन्दिर में कार्य कर रहे हैं । समाज में सवर्ण, असवर्ण के भेद को एक दूजे के विरूद्ध खड़ा किया गया । फिर असवर्ण कहाने वाले समाज को जन्म के आधार पर सवर्ण समाज से भिन्न बताने का प्रयास किया जा रहा है । समाज के जन्मगत जाति के आधार पर पिछड़े वर्ग को बहुजन समाज के नाम से सवर्णों से पृथक् सिद्ध करने की योजना क्रियान्वित की जा रही है । यहाँ विचारणीय है जातिगत बुराई पूरे भारतीय समाज का अंग है । इसे केवल सवर्ण, असवर्ण में बाँटकर देखना समस्या का समाधान नहीं है । क्योंकि समाज को सवर्ण, असवर्ण में बाँटने पर भी जाति व्यवस्था समाप्त नहीं हो जाती । दोनों वर्गों के सवर्ण, असवर्ण को ऊँच-नीच के नाम पर लड़ाया जा सकता है, परन्तु दोनों की बुराई इससे दूर नहीं होती । जैसी जाति व्यवस्था सवर्णों में है वैसी जाति व्यवस्था असवर्णों में भी है । जाति व्यवस्था समान व्यवहार और समान अधिकार से टूटती है । समान व्यवहार दोनों ही वर्गों आज भी मान्य नहीं है । छूतछात, ऊँच-नीच के आधार पर असवर्ण या दलित कहाने वाले लोगों में परस्पर व्यवहार नहीं होते । वे सारे असवर्ण होने पर भी समान नहीं बन सके न सवर्ण कहलाने वालों में विवाह और सामाजिक व्यवहार समानता के आधार पर किये जाते हैं । सवर्ण, असवर्ण का भेद केवल सामाजिक संघर्ष का कारण बनता है, सुधार का नहीं इसको जातीय आधार पर आरक्षण ने अधिक बल प्रदान किया है ।

हमारे समाज में छूआछूत, ऊँच-नीच होने पर भी धर्म, पूजा पद्धति, देवी-देवता, पाप-पुण्य आदि की मान्यता एक ही है और जो हमारी एक अस्मिता की परिचायक है, विभाजन करने वालों ने इस पर चोट करना आवश्यक समझा, क्योंकि इतनी सारी विषमताओं के बाद

www.thearyasamaj.org

भी यह समाज एक इन्हीं विचारों के कारण एक बना रहा । दलित मन्दिर में नहीं जा सकता था, परन्तु मन्दिर को अपना मानता था, देवता को वह बाहर से प्रणाम करके सन्तुष्ट होता था । विभाजन करने वालों ने समाज से बुराई को दूर करने के स्थान पर देवता को, धर्म को अलग करने का कार्य किया । दलित नेताओं ने षड़यन्त्रकारियों का मन्त्र लेकर बहुजन समाज और अल्पजन समाज का सिद्धान्त फैलाया । दलित नेताओं ने एक संस्था बनाई 'मूल निवासी परिषद्' इसका कार्य और उद्देश्य है- समाज के दलित कहाने वाले लोगों को यह समझाना है कि दलित पृथक् नस्ल है, यहीं भारत के रहने वाले हैं । सवर्ण लोग भारत में बाहर से आये हैं, ये हमारे शत्रु हैं । यहाँ एक विचित्र सिद्धान्त को जन्म दिया गया है । मेरा भाई, मेरा विरोधी है, मेरा भाई मेरे साथ अन्याय करता है, यह तो ठीक है परन्तु मेरा भाई मेरा विरोधी है, इसलिए उसके और मेरे पिता भी अलग-अलग हैं, यह सिद्धान्त कैसे प्रतिपादित किया जा सकता है? परन्तु षडयन्त्रकारी शक्तियों ने द्रविड़ और दलित सिद्धान्तों में इसको लागू करके दिखा दिया है ।

समाज में रहने वाले बड़े वर्ग को जिस प्रकार दलित बहुजन समाज के नाम पर समाज में बाँटने का कार्य किया जा रहा है, उसी प्रकार वनवासी लोगों को आदिवासी कहकर इस समाज से अलग किया जा रहा है । ये लोग वनों में रहते हैं । परन्तु इनका धर्म इनके देवी-देवता इनकी मान्यताएँ तो सब हिन्दू धर्म की हैं, परन्तु विभाजनकारी लोग उन्हें समझाते हैं तुम हिन्दू नहीं हो । तुम्हारा धर्म इनसे भिन्न है । ये लोग तुम पर राज्य करने के लिए बाहर से आये हैं । तुम यहाँ के प्रथम निवासी हो तुम आदिवासी हो, समाज के लोग तुम्हारे बाद इस देश में आकर तुमको जंगल में धकेलकर स्वयं सत्ताधारी बनकर बैठ गये हैं । इस विचार को देकर उनकी अस्मिता को बदल रहे हैं, जो विभाजन का आधार बनता, इन सब बातों का उद्देश्य है । इस देश की जनता में देश के प्रति सम्मान के भाव को समाप्त करना । इस देश को अपना न समझकर पृथक् अपने देश की मांग करना । विचार मनुष्य को अपनों से अपनों को कितना भिन्न बना देता है और कितना दूर कर देता है कि एक हिन्दू अपने देश को माता कहता है, मातृभूति कहता है वही व्यक्ति धर्म बदलकर उसे डायन कहता है । दूसरा उद्देश्य समाज की समरसता को समाप्त कर शान्ति भंग करना । परस्पर विद्वेष उत्पन्न करना, एक-दूसरे को शत्रु समझना । इस कार्य के लिए विदेशी शक्तियाँ पूरी तरह से कटिबद्ध हैं । हमारे समाज में देखने पर ऐसे लगता है जैसे सब स्थानों पर संघर्ष हो रहा है । समाज में इन शोधकर्त्ताओं, दलित और ब्राह्मण को विरोधी बनाकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है, यदि ब्राह्मण हिन्दू हैं तो दलित हिन्दू नहीं हो सकता, यदि आर्य हिन्दू हैं तो द्रविड़ हिन्दू कैसे हो सकता है । यदि यह देश बहुसंख्यक लोगों का है तो अल्पसंख्यक इस देश के हित चिन्तन क्यों करें क्योंकि अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक इस देश में शत्रु बनकर रह रहे हैं । इस देश की प्रजा बनकर नहीं रह सकते, इतना ही नहीं, इस आधुनिक उपभोक्तावाद ने इस देश के प्रत्येक व्यक्ति की परस्पर लड़ाने का प्रबन्ध कर दिया । दूरदर्शन के माध्यम से सास-बहू को लड़ाया जाता है, तो स्त्री स्वतन्त्रता के नाम पर स्त्री और पुरूषों के मध्य संघर्ष उत्पन्न किया जा रहा है । सभी स्वतन्त्रता के नाम पर परिवार संस्था को समाप्त करने के उपाय किये जा रहे हैं । समलैंगिकता को मान्यता देकर व्यापार के साथ समाज की संरचना पर भी चोट की जा रही है । बिना विवाह के सम्बन्ध रखने को वैद्य बनाकर या विवाहेतर सम्बन्धों को मान्यता देकर परिवार में अविश्वास को जन्म दिया गया है । परिवार के विछिन्न होने पर समाज की संरचना स्वतः ही छिन्न-भिन्न हो जाती है । आप देखेंगे देश में हिन्दू को बहुसंख्यक माना जाता है, परन्तु उपाय ऐसा किया जाता है जिससे यह बहुसंख्यक न रहे । इस बहुसंख्यक समाज का ईसाई हो सकता है, परन्तु उसे हिन्दू कहलाना पसन्द नहीं है । आज बौद्ध कहता है-वह हिन्दू नहीं, जैन कहता है- वह भी हिन्दू नहीं । सिक्ख कहता है-वह भी हिन्दू नहीं । यह सब नकारात्मक सोच को बढ़ावा देने का कार्य विदेशी शक्तियाँ करती हैं । समाज में विचार के मूल में दो बातें रही हैं- ब्राह्मण और संस्कृत । संस्कृत हमारे शास्त्रों की भाषा है । ब्राह्मण उसका व्याख्याकार, इनमें दोष है तो शास्त्रों की यथार्थ व्याख्या की जानी चाहिए तथा ये व्याख्याकार बनाये जाने चाहिए, परन्तु इनको समाप्त करना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि यही मुख्य आधार है जो देश को, समाज को एक बनाता है । आज भारतीय शास्त्र और उनके सही व्याख्याकार इन विदेशियों के सबसे बड़े शत्रु हैं । चर्च अनुभव करता है, भारत के धर्म परिवर्तन में सबसे बड़ी बाधा संस्कृत है, इसलिए जब तक संस्कृत को समाप्त नहीं किया जाता, तब तक ईसाइयत के प्रचार-प्रसार और भारत की एकता को खण्डित करने में सफलता नहीं मिल सकती । इसके लिए उन्होंने भारत सरकार को अपने विचार दिये हैं और सरकार उनको कार्यान्वित भी कर रही है । प्रमाण के लिए एक चर्च के परामर्शदाता और दलित नेता ने कांचा इक्लैय्या जिसकी चर्चा विश्वविद्यालयों में गोमांस की दावतों के सम्बन्ध में गत वर्ष हुई है । जो प्रखर मानवाधिकारवादी समझे जाते

www.thearyasamaj.org

लिव इन रिलेशनशिप

इन्द्रजित् 'देव'

मार्च 2010 में भारतीय उच्चतम न्यायालय ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय दिया है– ".....बिना विवाह किए भी भारत में कोई भी युवक व युवती अथवा पुरूष व स्त्री इकट्ठे रह सकते हैं । .....यदि कृष्ण व राधा बिना परस्पर विवाह किए एकत्र रह सकते थे तो आज के युवक–युवती/पुरूष–स्त्री ऐसा क्यों नहीं कर सकते?.....।"

यह निर्णय महत्त्वपूर्ण ही नहीं, भयंकर व अत्यन्त हानिकारक भी है । इसका परिणाम यह निकलेगा कि आप की गली में कोई पुरूष व स्त्री बिना विवाह किए आकर रहने लगेंगे, तो आप व आपकी गली में रहने वाले अन्य लोगों को उनका वहाँ रहना अत्यन्त बुरा, समाज व परिवार को दूषित करने वाला प्रतीत होगा, परन्तु आप उनका कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे । यदि आप कुछ पड़ौसियों को साथ लेकर उनके पास जाकर गली छोड़कर चले जाने को कहेंगे, तो वे उपरोक्त निर्णय दिखाएँगे व आप असफल होकर घर वापस लौट आएँगे । यदि आपके द्वारा पुलिस में उनकी शिकायत की जाएगी व पुलिस स्वयं आकर समाज, धर्म व कानून के विरूद्ध ऐसा कार्य करने के अपराध में उनसे पूछताछ करेगी, तो उसे भी वे उच्चतम न्यायालय का पूर्वोक्त निर्णय दिखाएँगे तथा पुलिस भी उनके विरूद्ध केस बनाए बिना, वापस लौटने के सिवाए अन्य कुछ नहीं कर पाएगी ।

मैंने यह घटना पूर्वोक्त रूप में कुछ स्थानों पर कुछ लोगों को सुनाई है, तो लगभग सभी श्रोताओं ने यही कहा है कि न्यायालय ने भ्रष्ट करने व परिवारों की एकता को भंग करने के द्वार खोल दिए हैं, परन्तु मेरे विचार में न्यायालय का इस निर्णय में कोई दोष नहीं है, क्योंकि न्यायपालिका का काम निर्णय देना है तथा वह निर्णय देती है–विधायिका द्वारा बनाए हुए अधिनियमों के आधार पर । विधायिका द्वारा बनाए गए अधिनियमों में लिखे एक–एक शब्द के गहन, पूर्ण व सत्य अर्थों पर विचार करके ही न्यायाधीश निर्णय दे सकते हैं । उनके निजी विचार कुछ भी

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

हैं, उनका राष्ट्रीय मानवाधिकार सम्मेलन 2001 में दिया गया वक्तव्य ध्यान देने योग्य है वे कहते हैं – वी वाण्ट टू किल संस्कृत इन दिस कण्ट्री (इण्डियन एक्सप्रेस 2001) अर्थात् हम इस देश में संस्कृत को समाप्त कर देना चाहते हैं । ये इस देश के विभाजन का लक्ष्य है ।

इसके लिए इस्लाम जिहाद के नाम पर तथा चर्च हिन्दुत्व का मजाक उड़ाकर, रामकृष्ण के भद्दे चित्र बनाकर, संस्कृत को नाजियों की भाषा बताकर, हिन्दूओं को फासिस्ट कहकर, हिन्दूओं और हिन्दू शब्द से लोगों के मन में घृणा उत्पन्न कर, उनको ईसाई बनाकर इस समाज और देश का विरोधी बनाया जा रहा है । इसके लिए आधुनिक विधाओं का भरपूर उपयोग लिया जाता है । इसके लिए लोगों को शिक्षित करने के नाम पर पाठ्यक्रमों, मिथ्या इतिहास, पूर्वजों की निन्दा, धार्मिक विचारों के प्रति घृणा उत्पन्न की जाती है । मानव अधिकार के नाम पर ईसाई प्रचारक, नक्सली हिंसक, आतंकवादियों की वकालत की जाती है, उनका पक्ष लिया जाता है, लोगों को शक्ति सम्पन्न करने के नाम पर गलत विचारों का प्रचार किया जाता है । नेतृत्व के नाम समाज को एक रखने वाली देश के प्रति सम्मान सिखाने वाली भावनाओं का विरोध करना सिखाया जाता है ।

इस प्रकार विश्व की बड़ी शक्तियाँ देश के खण्ड–खण्ड करने में सक्रिय हैं । इन लोगों के सत्ता में आने से देश का विभाजन अनिवार्य है । अतः अनुचित विचारों का सशक्त समाधान कर सकता है, तो वह आर्यसमाज ही है । अकेले ऋषि दयानन्द ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने विदेशियों के षड़यन्त्रों को समझा, देश की उन दुर्बलताओं को दूर करने का यत्न किया, जिनका विधर्मी और विदेशी लोग लाभ उठाकर समाज को तोड़ते थे । आज इन शक्तियों का वैचारिक स्तर पर प्रखरता से उत्तर देकर समाज में अपने समाज व देश के प्रति प्रेम उत्पन्न करने का प्रचार पूरी शक्ति से करने की आवश्यकता है । भारत की सत्ता पर विदेशी कम्पनियों का अधिकार होने से बचाना है । यही अन्तिम अवसर है । क्योंकि देश का विभाजन जनता नहीं करती सत्ता करती है ।

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति,
न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।

चेतो बच जाओगे नहीं तो विनाश निश्चित है ।

-परोपकारी से साभार

www.thearyasamaj.org

क्यों न हों, वे अधिनियम के बन्धन में अक्षरशः बन्धे होते हैं । इस सम्बन्ध में मैं प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ ।

इंग्लैण्ड में एक समय में ऐसा कानून बनाया गया था कि लन्दन की सड़कों पर कोई घोड़ा-गाड़ी नहीं लाई जाएगी और यदि कोई ऐसा करेगा तो उसे दण्डित किया जाएगा । कुछ दिनों तक इस अधिनियम का पालन होता रहा परन्तु एक दिन लोगों ने देखा कि एक गाड़ी लन्दन में चल रही थी । चालक को वहाँ की पुलिस ने न्यायालय में प्रस्तुत किया, परन्तु न्यायाधीश उसे कोई दण्ड न दे पाए, क्योंकि चालक ने यह सिद्ध कर दिया कि वह जो गाड़ी लेकर लन्दन में घूम रहा था, वह घोड़ा-गाड़ी थी ही नहीं, अपितु घोड़ी-गाड़ी थी । इसी प्रकार एक दूसरी घटना भी लिखता हूँ-अंगेजों के शासन काल की भारत की यह घटना है । तब एक न्यायालय में चल रहे मुकद्दमे में फांसी पर लटका देने का दण्ड एक अपराधी को न्यायाधीश ने देते हुए लिखा- **"He should be hanged."** उस अपराधी को उसके वकील ने कहा कि तुम चिन्ता मत करो । मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा । कुछ लोगों का विचार है कि वह वकील जवाहर लाल नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू थे । वस्तुतः वही वकील थे, या कोई अन्य, मुझे पूर्ण ज्ञान नहीं है । अस्तु। जब अपराधी को फांसी का फंदा डालकर लटकाया गया तो, अपराधी को तुरन्त छुड़वा लिया कि न्यायाधीश ने अपने आदेश में यह नहीं लिखा कि इसको तब तक लटकाए ही रखना है, जब तक इसके प्राण न निकल जाएँ।'' पास खड़े उच्चाधिकारी व कर्मचारियों को उस वकील ने फांसी पर लटकाने से पूर्व ही उक्त आदेश का अर्थ समझा व मनवा लिया था कि इसमें तो इतना ही लिखा है कि इस अपराधी को लटकाया जाए । इसमें यह कहाँ लिखा है कि इसे मरने तक लटकाया जाए । इसमें यह कहाँ लिखा है कि इसे मरने तक लटकाए रखना है । अधिवक्ता ने अपराधी को छुड़ा लिया, बचा लिया । यह उसके द्वारा शब्दार्थ की गहराई तक जाने का परिणाम था । कुछ लोग कहते हैं कि इस घटना के पश्चात् ही तत्कालीन शासन ने ऐसी व्यवस्था की, कि न्यायाधीश ऐसे अपराधियों के मामले में निर्णय देते हुए लिखने लगे- **"He should be hanged till death"** अर्थात् इसे तब तक लटकाए रखा जाए, जब तक इसकी मृत्यु न हो जाए ।

सन् 2010 में पूर्वोक्त मामले में न्यायाधीशों का कोई दोष नहीं है । इस कथन को पाठकों में से वे पाठक मेरी बात अच्छी प्रकार समझेंगे, जिनको न्यायालयों की न्यायविधि का ज्ञान है । दोष वस्तुतः उनका है जिन्होंने न्यायालयों की न्यायविधि का ज्ञान है । दोष वस्तुतः उनका है जिन्होंने पुराणों में कृष्ण जी व राधा के सम्बन्धों को अश्लील रूप में प्रस्तुत करने वालों के हाथ न कटवाये, न पुराण जलवाये । पुराणों की हिन्दु समाज में मान्यता व प्रतिष्ठा है । न्यायालय में सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से पापी व दोषी युवक व उस युवती के वकील ने वे प्रसंग प्रस्तुत किए जिनसे कृष्ण जी व राधा के शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने का वर्णन है (ब्रह्म वैवर्त पुराण, श्री कृष्ण जन्म खण्ड, अ. ४६ व अ.१५) इसमें न्यायाधीशों का दोष क्या है? सरकार की ओर से प्रस्तुत हुए अधिवक्ता भी पूर्वोक्त पुराण के प्रमाणों को झुठला नहीं सके । पूरा हिन्दू समाज पुराणों को सत्य व ऐतिहासिक ग्रन्थ मानता है । आर्यसमाज बहुत पहले ही पुराणों को झुठला चुका है, व **महर्षि दयानन्द से कृष्ण जी के विषय में स्पष्ट लिखा है-देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है । उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है । जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा** (स.प्र. एकादश समुल्लास)

महाखेद की बात है कि इस अनिष्टकारी निर्णय के आने के बाद 3 वर्षों में भी पूरे देश में कोई हलचल नहीं हुई । जगद्गुरू बने बैठे शंकराचार्यों में से एक ने भी इस निर्णय व इसमें राधा व कृष्ण जी के चरित्र को गलत रूप में न्यायालय द्वारा प्रमाण मानने से भविष्य में क्या दुष्परिणाम होंगे, इसकी कोई कल्पना व इसे रोकने हेतु कोई कार्यक्रम व इच्छा नहीं है । इसके अतिरिक्त कोई सन्त, कोई महन्त, कोई ठगन्त, कोई बापू, कोई गुरू, कोई बाबा, कोई संन्यासी, कोई मौलवी, किसी धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक संस्था का कोई पदाधिकारी आजतक इस विषय में कुछ नहीं बोला । इससे सिद्ध है कि उनकी दृष्टि में यह निर्णय एक युवक व एक युवती तक ही सीमित रहेगा । मेरे विचार में यह एक दूरगामी, अनिष्टकारी निर्णय है, तथा इसके विरोध में केवल हिन्दुओं को ही नहीं, अपितु आर्यों, सिक्खों, मुसलमानों, जैनियों व बौद्धों, वनवासियों, नास्तिकों व कम्यूनिस्टों को भी एकत्र होकर आवाज उठानी चाहिए थी व सभी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व साम्प्रदायिक मतभेद भुलाकर इस विषय पर एकजुट होना चाहिए था । खेद है! हमारे देश में राजनैतिक सुख व भोग हेतु परस्पर विरोधी या भिन्न-भिन्न विचारों वाली २५-२६ पार्टियाँ एकत्रित होकर कथित न्यूनतम कार्यक्रम बना लेती हैं, परन्तु सामाजिक, धार्मिक संस्थाएँ राजनैतिक दल व

www.thearyasamaj.org

शीर्ष पर संगीन अपराधों के मायने

वेद प्रताप 'वैदिक'

इतना नैतिक पतन हो गया है कि सन्त, जज व सम्पादक जैसी हस्तियां भी कदाचार में लिप्त पाई जा रही हैं ।

इधर पिछले कुछ हफ्तों में दुष्कर्म के तीन मामले हमारे सामन आए हैं । पहला, आसाराम का, दूसरा, सर्वोच्च न्यायालय के एक जज का और तीसरा पत्रकार तरूण तेजपाल का! यूं तो देश में दुष्कर्म की घटनाएं रोज ही हो रही हैं और उनकी सही संख्या का पता लगाना भी बहुत मुश्किल है, लेकिन ये तीनों मामले अपने आप में अन्य घटनाओं से सर्वथा अलग हैं ।

आमतौर पर समझा यह जाता है कि दुष्कर्म की शिकार होने वाली अबोध, अशिक्षित और गरीब 'औरतें' ही होती हैं, वे 'महिलाएं' नहीं, जो जागरूक हों, शिक्षित हों, संपन्न हों और सबल भी हों । इसके साथ यह भी माना जाता है कि अक्सर दुष्कर्मी लोग वे होते हैं, जिनकी कोई खास सामाजिक जिम्मेदारी नहीं होती और जिन्हें अपनी प्रतिष्ठा की भी विशेष चिंता नहीं होती । हालांकि, इन तीनों मामलों में आरोपी ऐसे लोग हैं, जो हमारे समाज के शिखर पर विराजमान हैं ।

एक संत से, एक जज से और एक प्रधान संपादक से समाज क्या आशा करता है? किसी संत या जज से तो आदर्श आचरण की ही अपेक्षा की जा सकती है । ऐसा आचरण, जो दूसरों के लिए अनुकरणीय हो । पत्रकार भी आदर्श उपस्थित कर सके तो क्या कहने? लेकिन उसका आचरण सामान्य लोगों के आचरण से नीचा तो नहीं होना चाहिए । यहां तरूण तेजपाल का आचरण सामान्य से नीचा तो है ही, उसमें अहंकार और चालाकी की दुर्गंध भी है । छह माह तक प्रधान संपादक पद से छुट्टी लेना भी कोई प्रायश्चित है? यह तो प्रायश्चित का मजाक है ।

'तहलका' की प्रबंध संपादिका शोमा चौधरी ने जिस तरह अपने संपादक का पक्ष लिया, वह पत्रकारों को गुस्सा दिलाने के लिए काफी है । क्रोधित पत्रकारों के सवालों के जवाब में वे पूछती हैं कि 'आप लोग

शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....

समाज हित को लेकर एक मुद्दे पर भी एकत्रित नहीं होते । मुझे इस विषय में यह निवेदन करना है ।

बागवानों ने अगर अपनी रविश नहीं बदली,
तो पत्ता-पत्ता इस चमन का बागी हो जाएगा ।

१६ दिसम्बर को बलात्कार की दिल्ली में हुई दुर्घटना के बाद देश में प्रजा ने जो चेतना व विरोधभाव प्रकट किया, उससे सरकार हिल गई । इससे सिद्ध है कि राजनेता केवल जनता के दबाव के आगे ही झुकते हैं । पूर्वोक्त विषय में निष्क्रिय समाज व राष्ट्र की चिन्ता कौन करेगा? आज हर कोई उच्छृंखल है । रही-सही कमी प्रस्तुत निर्णय के बाद होगी । न धर्मगुरूओं को, न समाजशास्त्रियों को, न धार्मिक संस्थाओं को उच्छृंखल हो रहे इस समाज व राष्ट्र की कोई चिन्ता है । जब ऐसा कानून कोई है ही नहीं जिसके अधीन ऐसा करने वाले स्त्री-पुरूष को अपराधी मानकर दण्ड दिया जा सके, तो न्यायालय उनको दण्ड दे ही कैसे सकता है? उच्चतम न्यायालय का यह निर्णय आने के बाद किसी राजनैतिक दल की भी नींद नहीं खुली व इस निर्णय के पश्चात् **Live in Relationship** के नाम पर बिना विवाह किए रहने वालों की संख्या बढ़ने लगी है । अब उनको उच्चतम न्यायालय का निर्णय विशेष उत्साह प्रदान कर रहा है व उनका मनोबल ऐसे उच्छृंखलतापूर्ण कार्य करने का बढ़ता ही जा रहा है । इस स्थिति में एक स्पष्ट कानून बनाने की तुरन्त आवश्यकता है, जिसके अधीन ऐसे सम्बन्ध को अवैध व कठोर दण्डनीय माना जाए । राधा व कृष्ण जी का कथित प्रसंग इसमें बाधा नहीं बनता ।

सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक संस्थाओं, समाज-शास्त्रियों! जागो तथा इस सरकार पर तुरन्त दबाव डालो कि वह वाञ्छनीय कानून बनाए । सुख-सुविधाओं व धन-ऐश्वर्य में डूबे राजनैतिक नेताओं!! निद्रा त्यागो तथा देश के परम्परागत वैवाहिक आदर्श की रक्षार्थ तुरन्त वाञ्छनीय कानून बनाओ अन्यथा आने वाला इतिहास तुम्हें क्षमा नहीं करेगा ।

दे रही हों आंधियाँ जब द्वार पर दस्तक तुम्हारे,
तुम नहीं जगे तो यह सारा जमाना क्या कहेगा?
बहारों को खड़ा नोलाम देखा पतझड़कर रहा है
तुम नहीं उठे तो यह आशियाना क्या कहेगा?

-चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट, यमुनानगर, हरियाणा ।

www.thearyasamaj.org

पीड़िता हैं, क्या? तीखे सवाल पूछने वाले पत्रकारों को भारत की जनता सलाम करेगी कि उन्होंने अपना धर्म निभाया । उन्होंने कोई लिहाजदारी नहीं की । सबका भंडाफोड़ करने वाले एक दुश्चरित्र आदमी का भण्डाफोड़ कर दिया ।

कोई भी दुश्चरित्र आदमी इसलिए बचकर नहीं निकलना चाहिए कि उसने संत या जज का चोला पहन रखा है या पत्रकार का नकाब लगा रखा है । अब तेजपाल को न तो उनकी शोमा चौधरी बचा सकती हैं और न ही वे नेता बचा सकते हैं, जो उनके आभारी हैं, तहलका भंडाफोड़ की वजह से । उन्हें तो तेजपाल को प्रसार-भारती का सदस्य बनने से रोकना पड़ा है । जिस युवती के साथ उसने दुष्कर्म की कोशिश की है, अब वह भी उन्हें नहीं बचा सकती, क्योंकि तेजपाल ने अपने गुनाह पर खुद मुहर लगा दी है । यह मुहर भी बड़ी गंदी है । उन्होंने खुद स्वीकार किया है कि उन्होंने वह सब शराब के नशे में किया है । आप दारू का यदा-कदा सेवन नहीं करते हैं, आप दारूकुट्टे हैं, यह आपने खुद मान लिया है । यानी आप दुष्कर्म और दारूबाजी, दोनों अपराधों के लिए एक साथ जिम्मेदार हैं । शराब के नशे में होने से इस अपराध की गंभीरता किसी भी तरह कम नहीं हो जाती ।

यदि अब तेजपाल को वह पीड़ित युवती भी किसी दबाव में आकर माफ कर दे तो भी उन्हें अब जेल जाने से कोई बचा नहीं सकता, क्योंकि उस युवती ने अपने ई-मेल में लिखा है कि तेजपाल ने उसके साथ दुष्कर्म की कोशिश एक बार नहीं, दो बार की है । लिफ्ट में जाते हुए । दोनों बार वह युवती अपने कमरे की तरफ दौड़ी है, 'कांपते हुए और रोते हुए ।' इसका अर्थ यह हुआ कि दुष्कर्म की यह घटना सिर्फ एक दिन का अचानक हुआ प्रसंग नहीं है । दोनों बार लिफ्ट में की गई करतूत बताती है कि यह एक दीर्घकालीन और सुनियोजित अपराध की पूर्ण मानसिक तैयारी का परिणाम है । तेजपाल ने अब तो माफी मांग ली है, लेकिन उस युवती को पहले लिखे ई-मेलों में काफी धमकाया है । उसे यह भी कहा है कि वे नशे में थे, इस वजह से उन्हें गलतफहमी हो गई होगी । उसे नौकरी से निकालने की भी धमकी दी थी । यह युवती 'तहलका' पत्रिका में काम करती थी और तेजपाल की बेटी की सहेली भी है । वह 'तहलका' द्वारा आयोजित एक 'विचारोत्सव' में भाग लेने के लिए गोवा गई थी और तेजपाल व अन्य लोगों के साथ एक ही होटल में ठहरी हुई थी ।

इससे भी अधिक गंभीर मामला एक सर्वोच्च न्यायालय के जज का है, जिसने साल भर पहले एक प्रशिक्षु वकील युवती के साथ अत्यंत आपत्तिजनक बर्ताव करने की कोशिश की थी । जज की उम्र उस युवती के दादा के बराबर है । जज महोदय, अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं । उस पीड़ित युवती से रहा नहीं गया । उसने सीने में दबे इस राज को एक ब्लॉग में खोल ही दिया । सर्वोच्च न्यायालय ने पहल की और जांच शुरू कर दी । शीघ्र ही उसके परिणाम भी सामने आएंगे । गौरतलब है कि यह घटना दिल्ली के एक होटल के कमरे में उन दिनों घटी है जबकि निर्भया (दामिनी) पर हुए नृशंस दुष्कर्म से सारा देश आंदोलित था । इस दुस्साहसी बूढ़े-खूसट जज का नाम अभी तक प्रकट क्यों नहीं हुआ ?

सबसे घृणित मामला है, आसाराम का । आसाराम जिस तरह भागता रहा, छिपता रहा, धूर्ततापूर्ण बयान झाड़ता रहा और फिर सींखचों के पीछे चला गया, क्या कोई भी सजा उसके लिए काफी होगी? वह तो जीते जी मरे के समान है । संत का चोला पहना हुआ यह नरपशु चाहे तो खुद को मौत से बदतर सजा देकर अनुकरणीय उदाहरण बन सकता है, क्योंकि संत का आचरण तो अनुकरणीय होना ही चाहिए न !

इन तीनों मामलों से हमें क्या सबक मिलता है? पहला, समाज में कानून का डर काफी नहीं है । 'समरथ को नहिं दोष गुसांई'। दोष सिद्ध हो जाए तो भी सजा मिलने में इतनी देर लगती है कि सजा का कोई सामाजिक असर नहीं होता । दूसरा, समाज में अशालीन सामग्री के प्रचार ने यौन-अपराधों को साधारण घटना बना दिया है । समाज की बर्दाश्त करने की हद बढ़ गई है या कहिए कि संवेदनशीलता कुंद हो गई है । तीसरा, सत्ता, पैसा और प्रसिद्धि मिलने से जो ऊर्जा उत्पन्न होती है, यदि उसके उर्ध्वीकरण के रास्ते बंद हो जाएं या उसे सकारात्मक इस्तेमाल न हो तो वह व्यभिचार, दुष्कर्म, हत्या और झीना-झपटी में प्रकट होती है । चौथा, हम अपराधियों को सिर्फ कानून और समाज का डर दिखाते हैं । उनके दिमाग से भगवान या किसी सर्वज्ञ शक्ति या अपने अंतःकरण का डर लगभग शून्य हो चुका है । इसलिए साधारण आदमी तो घृणित से घृणित कुकर्म बेखटके करता ही है, संत, जज, अध्यापक और पत्रकार जैसे प्रबुद्ध लोग भी कदाचार की गर्त में गिरने से नहीं हिचकते । दुष्कर्म तो हत्या से भी अधिक संगीन अपराध है । इसे हतोत्साहित करने के लिए राज्य, समाज और व्यक्तिगत अंतःकरण तीनों को एक साथ सक्रिय होना होगा ।

दैनिक भास्कर से साभार

www.thearyasamaj.org

- काव्य सलिला -

श्रद्धानन्द महान

डा. सुन्दरलाल कथूरिया

ऋषिवर के पीछे हुए, श्रद्धानन्द महान् ।
युगों – युगों तक कर रहा, जग उनका गुणगान ।।
जीवन में जो कुछ किया, श्रद्धा उसका मूल ।
उत्तरार्द्ध उत्कर्ष कर, सभी सुधारीं भूल ।।
सेवा – व्रत जो है कठिन, ले उसका संकल्प ।
जीवन – भर उस पर चले, सोचा नहीं विकल्प ।।
दलितों का उद्धार कर, दिया उन्हें नवप्राण ।
भटके जन को शुद्ध कर, विधवाओं का त्राण ।।
धर्मान्तर कर जो गये, उन्हें बनाया आर्य ।
जीवन का यह था मिशन, सारा जग हो आर्य ।।
गुरूकुल शिक्षा के लिए, किया सभी कुछ दान ।
निर्भय वेद – प्रचार कर, किया आत्म – बलिदान ।।
पद छोड़े क्षण नहीं लगा, मारी उनको लात ।
हिन्दी–हिन्दू के लिए, किया समर्पित गात ।।
नारी शिक्षा के लिए, किये प्रयत्न हजार ।
मात सुमाता बन सके, वेद पढ़े सुविचार ।।
जामा मस्जिद से किया, मंत्रों का उच्चार ।
वेद–ज्ञान सब के लिए, भेद – भाव बेकार ।।
दान – वृत्ति भी थी प्रबल, लोभ न मन अभिमान ।
देव – विहित जीवन जिया, श्रद्धानन्द महान् ।।
जीवन का उद्धार कर, श्रद्धानन्द समान ।
सतसंगति पारस मिले, जीवन बने महान् ।।

मेरी तमन्ना (अभिलाषा)

देवन्द्रार्य

भ्रष्टाचार को मिटाना होगा ।
काला धन विदेश से लाना होगा ।
घर–घर सत्य का पाठ पढ़ाना होगा ।
सरकार को गरीबों का दुःख मिटाना होगा ।
यही मेरी तमन्ना है ।।१।।
मँहगाई को दूर भगाना होगा।
सबको संयम का पाठ पढ़ाना होगा ।
जिन्दगी से समस्याओं को दूर भगाना होगा ।
परिश्रम से उत्साह को बढ़ाना होगा ।
यही मेरी तमन्ना है ।।२।।
खोये भारत को फिर से जगाना होगा ।
स्वदेशी को अपनाकर स्वाभिमान को जगाना होगा ।
भारत का फिर से आर्य राष्ट्र बनाना होगा ।
जिन्दगी में सफलता, सदाचार को अपनाना होगा ।
यही मेरी तमन्ना है ।।३।।
बच्चों को सच्चे ईश्वर का पाठ पढ़ाना होगा ।
बड़े–बूढ़ों, पितरों को सम्मान दिलाना होगा ।
युवाओं को संस्कारवान्, चरित्रवान् बनाना होगा ।
भगवान को सर्वोपरि मानकर दुर्गुणों को हटाना होगा ।
यही मेरी तमन्ना ।।४।।
माताओं–बहनों को धर्म का सही स्वरूप समझाना होगा ।
अन्ध–विश्वास, पाखण्ड, झूठ, छल–कपट को हटाना होगा ।
पुष्टिकारक, बलकारक, रोगनाशक पदार्थों को,
यज्ञ के माध्यम से वायु में फैलाना होगा ।
यही मेरी तमन्ना है ।

-आर्ष महाविद्यालय,
गुरूकुल कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, गेट नं. ३, हरियाणा,
चलभाष-९९९३०२६३०६

www.thearyasamaj.org

कब्ज के पन्द्रह कारण

आयुर्वेद शिरोमणि डॉ. मनोहर दास अग्रावत, एन.डी. विद्यावाचस्पति (प्राकृतिक चिकित्सक)

बिना भूख स्वाद के कारण अधिक मीठे पदार्थ खाना और अधिक खा लेना, तले हुए पदार्थ खाना, अच्छी तरह चबाये बिना खाना ये सब कब्ज के कारण हैं। लगातार कब्ज नाशक चूर्ण फांकते रहना, कब्ज बढ़ाने का काम करता है।

१- हाजत रोकना

पाखाने के हाजत की तुलना घड़ी की सुबह जगाने वाली घंटी (अलार्म) से की जा सकती है जो थोड़ी ही देर बोलती है। यह विवेक ध्वनि की भाँति है, जिस पर अमल न करने पर उसका सुनाई देना बंद हो जाता है। हाजत से शौच और बिना हाजत के शौच में बड़ा अंतर है। हाजत से शौच जाने पर पेट बहुत शीघ्र और अच्छी तरह से साफ हो जाता है। शौच का समय निश्चित करके ठीक उसी समय जाते रहने से और मन से मलाशय पर जोर डालने से कुछ दिनों बाद हाजत होने लगती है।

२- भोजन की अनियमितता

भोजन में अनियमितता रखकर शौच में नियमितता नहीं लायी जा सकती। कब्ज रहित लोगों का शौच क्रम बहुत कुछ भोजन क्रम से सम्बन्धित होता है। खाने का समय अस्त-व्यस्त हो जाने पर शौच में भी अनियमितता होना स्वाभाविक है। शौच के विचार में, भोजन पर विचार पहली शर्त होनी चाहिए।

शौच का समय और परिमाण इस बात पर निर्भर है कि हमने भोजन कितनी बार किया, कब किया और कैसा किया और कितना किया। अक्सर लोग शौच में नियमित होते हुए भी भोजन में नियमित नहीं होते। इस प्रकार कई-कई खुराकों का मल आंतों में पड़ा रहने के कारण भोजन में व्यतिक्रम करते रहने पर भी यद्यपि समय पर लोगों को शौच हो जाता है, पर है वह कब्ज की निशानी।

३- निद्रा में व्याघात

शौच की नियमितता का नींद से और सबेरे उठने के वक्त से भी कम सम्बन्ध नहीं है। यदि कोई कभी रात को कम सोये या देर-सबेर सोये तो शौच के क्रम में अवश्य अंतर पड़ जायेगा। सही समय पर उठना और रात को सोने से कम से कम चार घंटे पहले रात का भोजन कर लेना कब्ज निवारण की एक अत्यावश्यक विधि है।

४- शौच में जल्दबाजी

आमतौर पर शौच का काम कुछ पलों का ही होता है। कभी-कभी तो बड़ी आंतों का पूरा आधा हिस्सा उसी एक खिंचाव में खाली हो जाता है। लेकिन प्रायः पहली किश्त में सिर्फ अवग्रहाम मलाशय का मल निकलता है और उसी समय अवरोही आंतों का मल आगे सरककर फिर अवग्रहाम आँतों को भरता है और पाखाने की दूसरी किश्त आती है।

ऐसे लोगों की तादाद बहुत बड़ी है जिनकी बड़ी आँतों का अवग्रहाम गलत भोजन और हाजत रोकने के अत्याचार के फलस्वरूप मेले का हौज बन जाता है और प्रायः इतना अधिक फैल जाता है और एक हिस्सा दूसरे के ऊपर इस तरह चढ़ जाता है कि पूरी सफाई के लिए दोहरी और तिहरी कोशिश की जरूरत होती है। अतः ऐसे लोगों को शौच में 5 से 15 मिनट तक लग जाते हैं। जल्दबाजी करने के परिणाम स्वरूप उल्टा खिंचाव होने लगता है और शौच एकदम रूक जाता है।

५- शौच का टालना और मल का बंधा होना

लोगों में एक गलत ख्याल यह भी है कि शौच के संबंध में लापरवाही करने या उसे टालने से कोई खास नुकसान नहीं है। बहुत से लोग शौच जाने का काम अपने दूसरे कामों की सुविधा के अनुसार रखना चाहते हैं।

दूसरा आम गलत ख्याल है कि मल को खूब बंधा होना चाहिये। पूरी तरह बंधे हुए मल के मानी हैं-कब्ज। जब खुराक का

www.thearyasamaj.org

फुजला ठीक वक्त से निकलता है तो पाखाना नरम पुल्टिस की तरह होना चाहिए ।

६- पानी की कमी

कम पानी पीना कब्ज पैदा करता है क्योंकि शरीर में पानी की कमी होने पर आँतें खुराक में से अधिक मात्रा में पानी खींच लेती हैं । रक्त में पानी की कमी रहने से शरीर में तरल रस जितनी मात्रा में चाहिये, नहीं निकल पाता है । इससे मल खुश्क होकर कब्ज हो जाता है । शरीर को कम से कम 24 घंटे में 3 लीटर पानी चाहिये । दिन-रात में पसीने और पेशाब के रूप में इतना पानी निकल जाता है । ज्यादा पसीना आने वालों को तो और अधिक पानी पीना चाहिये । प्यास लगे व्यक्ति को पानी पीना न भूलना चाहिये

किन्तु भोजन के समय कम से कम पानी पीना अच्छा है । भोजन के समय अधिक पानी पीने से पाचक रसों की तेजी कम हो जाती है । अगर तुझकों रहती कब्जी है तो पीने को पानी व खाने को सब्जी है ।

७- पाखाने की गंदगी

पाखाने की असुविधा और गंदगी भी कब्जी के कारणों में एक है । गांधी जी कहते थे कि पाखाने का स्थान इतना साफ होना चाहिए कि जितना कि चौका । इसका तात्पर्य यह है कि खाते समय मन प्रसन्न रखने के लिए जैसा साफ स्थान जरूरी है उतना ही साफ स्थान मानसिक प्रसन्नता के लिए शौच के समय जरूरी है ।

८- मानसिक चिन्ता

हमारे शौच पर भी मन का बहुत असर पड़ता है । यदि व्यक्ति चिंतित मन लेकर पाखाने जाता है तो शौच साफ नहीं होता । चिंताग्रस्त व्यक्ति को अच्छी हाजत कभी नहीं होता । कुछ लोग पाखाने में ही सारी चिन्ताएं करते हैं, शौच भूल जाते हैं । ऐसे लोग भी कब्ज के शिकार होते हैं ।

९- नशा

सभी नशे कब्ज पैदा करने वाले होते हैं ।

१०- भूख से अधिक खाना

हमारे शरीर को जितनी आवश्यकता हो, उतना ही खाना चाहिए । यह विचार कि ज्यादा खाना ज्यादा फायदा करता है, गलत है । कहावत है-'खाएं जितनी भूख, सोएं जितनी नींद।'

११- बिना भूख खाना

बिना भूख के खाना छोटी और बड़ी दोनों ही आँतों के लिए हानिकारक है । भूख न लगने का अर्थ है आंतों पर पहले से बोझ का लदा होना ।

१२- कम खाना

जरूरत से कम खाना भी कब्ज कारक है ।

१३- बिना खुज्जेवाली खुराक

सभ्य कहिये या बड़े आदमी बनने के फेर में लोग आजकल खाने वाली वस्तुओं का ऊपरी भाग निकालकर जो खाया जा सकने वाला है हटा देते हैं जिसमें बड़े लाभ छिपे होते हैं । छिलका आदि बड़े गुणकारी होते हैं ।

१४- बिना चबाये खाना

बिना भूख स्वाद के कारण अधिक मीठे पदार्थ खाना और अधिक खा लेना, तले हुए पदार्थ खाना, अच्छी तरह चबाये बिना खाना ये सब कब्ज के कारण हैं । लगातार कब्ज नाशक चूर्ण फांकते रहना, कब्ज बढ़ाने का ही काम करता है ।

१५- गलत खाना

बिना भूख स्वाद के कारण अधिक मीठे पदार्थ खाना और अधिक खा लेना, तले हुए पदार्थ खाना, अच्छी तरह चबाये बिना खाना ये सब कब्ज के कारण हैं । लगातार कब्ज नाशक चूर्ण फांकते रहना, कब्ज बढ़ाने का ही काम करता है ।

'मनोहर आश्रम' स्थान-उम्मेदपुरा
पो. तारापुर (जावद)-४५८३३०
जिला नीमच (म.प्र.)
शांतिधर्मी के जुलाई अंक से साभार

www.thearyasamaj.org

प्राणों की ऊर्जा और यशस्विता

प्रो. (डॉ.) सुन्दरलाल कथूरिया, डी.लिट्.

मनुष्य का जीवन श्वास-प्रश्वास पर टिका है, प्राणों पर टिका है। जब तक श्वास आ-जा रहे हैं, मनुष्य जीवित है और जब श्वास रूक जाते हैं, मनुष्य का जीवन समाप्त हो जाता है। वह कोई भी काम नहीं कर सकता। सभी इन्द्रियों के ज्यों-के-त्यों होते हुए भी, प्राण-शक्ति के बिना, वे अपना-अपना काम नहीं कर सकतीं, मनुष्य कोई काम नहीं कर सकता। प्राणों के निकलते ही मनुष्य को मृत घोषित कर दिया जाता है, उसके शरीर का कोई मूल्य नहीं रहता। हिन्दू (आर्य) उसे जला देते हैं, मुसलमान दफना देते हैं, पर घर में कोई नहीं रखता। वैदिक और श्रेष्ठ परम्परा मृतक को अग्नि में भस्म करने की ही है। वेद भगवान् का स्पष्ट आदेश है: 'भस्मान्तँ शरीरम्' (यजुर्वेद, 40/15) अर्थात् शरीर की अन्तिम परिणति उसके भस्म होने में ही है। स्पष्टतः शरीर का महत्व प्राणों के साथ है, निष्प्राण शरीर का, विशेषकर मनुष्य के शरीर का कोई मोल नहीं।

प्राणों के महत्व को ध्यान में रखकर वैदिक ऋषियों ने प्राणों को बलशाली और यशस्वी बनाने की प्रभु से प्रार्थना की है। इसलिए संध्या के मन्त्रों में 'ओं प्राणः' का समावेश किया गया है। प्रातः सायं संध्या करते समय भक्त-साधक ईश्वर से प्रार्थना करता है कि प्रभु! मेरे प्राण वास्तविक अर्थों में प्राण हों अर्थात् वे बलशाली, पवित्र और यशस्वी हों। ध्यातव्य यह है कि प्रार्थना के साथ पुरूषार्थ भी आवश्यक है और पुरूषार्थ या प्रयत्न तो साधक को स्वयं करना है। प्रार्थना पुरूषार्थ के साथ मिलकर ही फलवती होती है। अब विचारणीय यह है कि प्राण बलशाली, ऊर्जस्वी, पवित्र और यशस्वी कैसे बनेंगे? साधक कौन से ऐसे काम करे कि जिनसे उक्त उद्देश्यों की सिद्धि हो जाए, प्राण वस्तुतः प्राण बन जाएँ और मनुष्य का जीवन सार्थक हो जाए।

प्राणों को बलशाली बनाने का सर्वोत्तम साधन है प्राणायाम। यम, नियमों का सम्यक् प्रकार से पालन करने के उपरान्त आसन को सिद्ध करने का प्रयास करना चाहिए, तदुपरान्त अच्छे प्रकार से आसन लगाकर प्राणायाम करना चाहिए। श्वास-प्रश्वास की गति को यथाशक्ति रोकने का नाम प्राणायाम है। बाहर से अन्दर की ओर ली जाने वाली वायु का नाम श्वास और अन्दर से बाहर की ओर छोड़ी जाने वाली वायु का नाम प्रश्वास है। प्राणायाम किसी अनुभवी गुरू से सीखकर ही करना चाहिए, अन्यथा हानि की संभावना हो सकती है। योगदर्शन में प्राणायाम के जिन चार प्रकारों का उल्लेख है, वे हैं-बाह्य, वे हैं- बाह्य, आभ्यान्तर, स्तम्भवृत्ति और बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी। महर्षि दयानन्द ने भी 'सत्यार्थ प्रकाश' में प्राणायाम के इन्हीं चार प्रकारों का उल्लेख किया है। प्राणायाम के इन प्रकारों का उत्तरोत्तर अभ्यास करना चाहिए अर्थात् पहले बाह्य प्राणायाम का अच्छी प्रकार अभ्यास करे, तदुपरान्त आभ्यन्तर-प्राणायाम का और फिर क्रमशः स्तम्भवृत्ति और बाह्याभ्यान्तर विषयाक्षेपी प्राणायाम का। इन प्राणायामों की विधि का उल्लेख यद्यपि स्वामी सत्यपति परिव्राजक ने अपनी पुस्तक 'सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार' (पृ.75-77) में किया है, तथापि प्राणायाम में अच्छी गति रखने वाले अनुभवी गुरू से बिना सीखे प्राणायाम नहीं करना चाहिए। प्राणायाम शौचादि से निवृत्त होकर, बिना कुछ खाये पिये यथासंभव शुद्ध स्थान, शुद्ध वातावरण और एकान्त में करना चाहिए। प्राणायाम करते समय 'ओ३म्' या 'प्राणायाम मन्त्रों' का जाप करते रहना चाहिए। इससे प्राणों की शुद्धि होगी, उनमें पवित्रता करने से जहाँ प्राण बलशाली और ऊर्जस्वी बनेंगे, वहाँ फेंफड़ों को प्रचुर मात्रा में शुद्ध वायु (आक्सीजन) के मिलने से रोगों की निवृत्ति भी होगी। रोगों की निवृत्ति से मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहेगा और वह बलशाली बनेगा। प्राणायाम से अज्ञानान्धकार का आवरण नष्ट हो जाता है- 'ततःक्षीयते प्रकाशावरणम्' (योगदर्शन, 2/52), अशुभ संस्कार समाप्त हो जाते हैं तथा विद्या की वृद्धि होती है। प्राणायाम से चित्त की एकाग्रता बढ़ती है तथा विद्या की वृद्धि होती है।

www.thearyasamaj.org

प्राणायाम से चित्त की एकाग्रता बढ़ती है तथा चित्त की चंचलता समाप्त होती है । शीतकाल में शीत के प्रभाव को भी प्राणायाम एक सीमा तक कम करता है । स्वामी सत्यपति जी के अनुसार, 'प्राणायाम के आधार पर बिना हाथ-पैर की क्रिया किये लम्बे काल तक व्यक्ति जल पर लेटा रह सकता है ।.....प्राणायाम करने से व्यक्ति के शरीर में इतना बल आ जाता है कि वह एक साथ दो कारों को रोक सकता है और अपनी छाती पर बहुत अधिक भार वाले पत्थर आदि को तुड़वाने में समर्थ हो जाता है ।' (सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार पंचम संस्करण, पृ. 79) इस प्रकार प्राणायाम से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अनेक लाभ हैं । इससे अनेक दुःसाध्य रोगों का निदान भी सम्भव है, इसे जहाँ आजकल स्वामी रामदेव प्रयोगात्मक धरातल पर सिद्ध कर रहे हैं, वहाँ स्वामी सत्यपति के ग्रंथों में भी देखा जा सकता है । स्वामी (मां) अद्वैतानन्द सरस्वती के ग्रंथों में भी देखा जा सकता है । स्वामी (मां) अद्वैतानन्द सरस्वती का 'योग-थेरॅपि' इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण उपयोगी ग्रंथ है ।

निःसन्देह, प्राणायाम करने के अनेक लाभ हैं । इससे प्राणों को बल और ऊर्जा प्राप्त होती है तथा प्राणायाम के साथ 'ओ३म्' नाम के जाप से प्राण पवित्र भी होते हैं, किन्तु शक्ति से अधिक प्राणायाम हानिकारक है- 'अति सर्वत्र वर्जयेत्'। रूग्णावस्था में भी प्राणायाम नहीं करना चाहिए ।

यह तो हुई प्राणों को बलशाली, ऊर्जस्वी और पवित्र बनाने की बात । आइए, अब इस पर भी विचार कर लें कि प्राणों को यशस्वी कैसे बनाया जा सकता है । प्राण वीरता, परोपकार, देश-धर्म-जाति (मानव-जाति) पर मर मिटने और ईश-भक्ति से यशस्विता को प्राप्त होते हैं, अमर-बन जाते हैं । जिसका यश होता है, वही जीवित रहता है, वही अमरत्व को प्राप्त होता है- 'कीर्तिर्यस्य स जीवति' । मातृत्व की सार्थकता ऐसी सन्तान को पैदा करने में है कि जो या तो भक्त हो या दानी और या फिर शूरवीर, अन्यथा स्त्री का बाँझ रहना अच्छा है, उसे अपना 'नूर' (सौन्दर्य, लावण्य, यौवन आदि) गँवाने से क्या लाभ? कवि के शब्दों में-

जननी जनै तो भक्त जन कै दाता कै सूर ।
न तो रहे वह बाँझ ही, काहे गवावै नूर ।।

निःसन्देह प्राणों की सबसे बड़ी सार्थकता ईश-भक्त होने में ही है । संसार में आज तक जितने भी सच्चे ईश-भक्त हुए हैं, वे अपने यशःशरीर से जीवित हैं, अजर-अमर हैं- भक्त ध्रुव, प्रहलाद आदि से लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा प्रभु आश्रित आदि । दानी व्यक्ति के प्राण भी यशस्विता को प्राप्त होते हैं- शिवि, दधीचि, कर्ण, राजा हरिश्चन्द्र आदि इसके उदाहरण हैं । शूरवीर भी कभी नहीं मरते । न्यायप्रिय, शूरवीर सम्राटों के असंख्य उदाहरण इतिहास ग्रंथों में मिल जाएँगे । मर्यादा पुरूषोत्तम राम, योगीराज श्री कृष्ण, गांडीवधारी अर्जुन आदि के नाम इस दृष्टि से देखे जा सकते हैं । देश की बलिवेदी पर मर मिटने वाले अमर शहीदों-शहीद भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, चन्द्रशेखर आदि का नाम भला कौन नहीं जानता । क्या हम अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द, वीर हकीकत राय आदि के नामों को भुला सकते हैं? नहीं न। दरअसल देश पर मर मिटने वालों, दयालुओं, दानियों, परोपकारियों, धर्मवीरों आदि के नाम अमर हो जाते हैं, उनके प्राण यशस्वी हो जाते हैं । शास्त्रकारों ने वीर रस के चार भेद माने हैं- युद्धवीर, दानवीर, दयावीर, धर्मवीर, किन्तु 'महाभारत' में शूरों के बहुत से भेदों का उल्लेख हुआ । (दे.महाभारत, दानधर्म पर्व) पण्डितराज जगन्नाथ ने भी उक्त चार भेदों का उल्लेख करने के बाद सत्यवीर, पण्डित्यवीर, क्षमावीर और बलवीर भेदों का भी नाम लिया है । इन सभी वीरों में यशस्विता प्राप्त करने वालों के नाम खोजे और लिए जा सकते हैं । यहाँ मूल तथ्य यही है कि हम संसार में रहते हुए कुछ-न-कुछ ऐसा श्रेष्ठ काम अवश्य करें कि जिससे हमारे प्राण यशस्वी हो जाएँ । बल का दुरूपयोग करने वालों के प्राण यशस्वी नहीं होते । वे विख्यात नहीं, कुख्यात होते हैं । वैदिक संध्या में 'ओं प्राणः प्राणः' के द्वारा प्राणों को बलशाली, पवित्र और यशस्वी बनाने की प्रार्थना की गयी है । साधक को सतत जागरूक रह कर इस दिशा में प्रयत्न करते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाना है ।

www.thearyasamaj.org

आर्य जगत के समाचार

शुद्धि संस्कार 89– ईसाई भाई बहिनों की घर वापसी –

जहाँ एक ओर वैदिक संस्कृति के ह्रास करने को मतों के अन्धानुयायी शिष्यों ने कुचक्र चलाया है वहीं वैदिक धर्म के प्रबल समर्थकों ने भी ग्रामों व नगरों में जा जाकर विकृति को दूर करने का सतत प्रयास किया है ।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के प्रचारक प्रणव शास्त्री द्वारा संकल्प लिया गया है कि प्रत्येक माह में कम से कम दो या अधिक ग्रामों को मत पंथ का परित्याग कराकर शुद्ध वैदिक संस्कृति से जोड़ना है । इसी क्रम में ग्राम अढ़ौली में डा. रामशंकर आर्य के सहयोग से धर्म दीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें 45 स्त्री 20 पुरूषों एवं 24 बच्चों ने भाग लिया, सभी ने सहर्ष यज्ञ में आहुति देकर अपने को धन्यभाग किया हम मिश्नरी के वहकावे में आकर उनके जाल में फंसे थे ।

प्रणव शास्त्री के अनथक प्रयास से यह पावन कार्य राष्ट्र, धर्म, संस्कृति को बचाते हुए मानव सभ्यता को बचाने का संकल्प है । उत्तर प्रदेश के रूहेलखण्ड क्षेत्र में व्यापक स्तर पर यह कार्य होना है जिसे चिन्हित कर प्रणव शास्त्री व उनके सहयोगी तन, मन, से करेंगे ।

अढ़ौली में धर्म दीक्षा यज्ञ में विशेष रूप से इन्द्र मुनि वानप्रस्थी, विश्व मुनि वानप्रस्थी, शेखर आर्य, प्रतिपाल शाक्य, कमला देवी, वेदप्रभा उपस्थित रहीं शुद्धि सभा द्वारा तीन सत्यार्थ प्रकाश, 10 लघु सत्यार्थ प्रकाश कुछ आर्य धार्मिक ट्रेक्ट वितरण किये गये ।

प्रणव शास्त्री (प्रचारक)

.....***.....

सुन्दरगढ़ जिले के भूकनपड़ा ग्राम में धर्मरक्षा अभियान के अन्तर्गत दो सौ परिवारों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया– ओडिशा एवं झारखण्ड की सीमा पर कुछ ग्रामों में ९० प्रतिशत भोले-भोले, सरल स्वभाव के वनवासी निवास करते हैं । इनकी सरलता का लाभ उठाकर कुछ राष्ट्रविरोधी तत्त्व इन्हें लोभ-लालच देकर राष्ट्रीय धारा से अलग करके विदेशी मतों में ढाल देते हैं । उन्हीं में से २०० परिवारों ने १५ जुलाई को यज्ञ में श्रद्धापूर्वक आहुति देकर गुरूकुल आश्रम आमसेना के आचार्य एवं कुशल वैद्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री पं. विशिकेशन जी शास्त्री के सान्निध्य में पुनः वैदिक धर्म को ग्रहण किया ।

.....***.....

आवश्यकता है

महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में चल रहे महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ऐसे उपाचार्य की आवश्यकता है जो काशिका तथा महाभाष्य एवं निरूक्तादि पढ़ाने में सक्षम हो । योग्यतानुसार वेतन एवं आवास-भोजनादि की सुविधा विद्यालय में दी जायेगी । नीचे लिखे पते पर प्रमाण-पत्र, अनुभव तथा पासपोर्ट साईज की फोटो के साथ आवेदन पत्र भेजें ।

रामदेव शास्त्री, आचार्य,

मो. 09913251448 महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा,

जिला राजकोट, गुजरात-363659 फोन नं. 02822-287756

त्रिदिवसीय अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न –

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार के तत्वावधान में त्रिदिवसीय संस्कृत सम्मेलन विज्ञान भवन में सम्पन्न हुआ । इसमें देश विदेश के लगभग 800 विद्वान एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

सम्मेलन का उद्घाटन अन्तर राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्बध परिषद् के अध्यक्ष माननीय श्री डॉ. कर्णसिंह द्वारा किया गया । अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. कर्णसिंह ने कहा "संस्कृत सभी वर्गों की भाषा है तथा यह भारतीय एकता की प्रतीक है । संस्कृत की उन्नति के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं उनमें सक्रियता एवं प्रभावात्मकता लाने की आवश्यकता है हम सभी को अपना उत्तरदायित्व समझना होगा ।"

शेष भाग पृष्ठ २४ पर .....

www.thearyasamaj.org

सभा क्षेत्र के समाचार एवं सूचनाएं

पिछले दिनों प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक उत्साह पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई । सभा क्षेत्र के विभिन्न अंचलों से सदस्य एवं अन्य महानुभाव उपस्थित हुए । बैठक के कुछ निर्णयों की जानकारी-

1) आर्य सेवक का जनवरी 13 से पुनः प्रकाशन प्रारम्भ का स्वागत करते हुए उस सम्बधं में होने वाले व्यय की प्रतिपूर्ति पर विचार किया गया । बैठक में निम्नानुसार योगदान देने के लिए घोषणाएं की गईं- (1) श्री अनिल शर्मा, नागपुर, सभा मंत्री रू.2000, (2) श्री सन्तोष गुप्त पुस्तकाध्यक्ष नागपुर रू.2000, (3) श्री देवी प्रसाद आर्य, सिवनी रू.2000, (4) श्री अशोक यादव सभा कार्यालय मंत्री रू.2000, (5) श्री विजय आर्य रू.2000 (6) श्री ब्रजलाल राठी रू.2000, (7) श्री पं. सुदर्शन आर्य, इटारसी रू.4000। अपेक्षा की गई कि प्रत्येक अन्तरंग सभा सदस्य रू.2000 की राशि भिजवाए ।

2) वेद प्रचार एवं प्रकाशन हेतु स्थायी निधि बनाने हेतु- (1) श्री मंयक चतुर्वेदी ने रू.25000 देने की घोषणा की ।

3) यजुर्वेद मराठी भाष्य प्रकाशन की योजना- श्री रामसिंह ठाकुर कांरजा लाड़ द्वारा उक्त भाष्य तैयार किया गया है इसे सभा द्वारा प्रकाशन करने की योजना है इस पर लगभग दो लाख रूपए व्यय होने की सभावना है इसके निम्नानुसार दान देने की घोषणा की गई- (1) श्री अनिल शर्मा रू.10,000 (2) श्री अशोक यादव रू.5000 (3) श्री मयंक चतुर्वेदी रू.5000 (4) श्री सन्तोष गुप्ता रू.5000

4) आर्य समाज हंसापुरी नागपुर में दीपावली तथा म. दयानन्द निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया । श्री अनिल शर्मा, सभा मंत्री श्री अशोक यादव, श्री प्रजापति, श्रीमति आरती पाठक, श्रीमति रजनी चौरसिया आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही । श्रीमति किरण यादव, महिला कांग्रेस की अध्यक्ष मुख्य अतिथि थी । श्री देवदत्त शास्त्री नागपुर तथा श्री शरद बोचरे पथरोट विशेष वक्ता थे । वक्ताओं ने दीपावली पर्व पर तथा महर्षि दयानन्द के प्रति अपने उद्‌गार प्रगट किए ।

शेष भाग पृष्ठ २३ पर .....

दयानन्द उवाच- विद्या-अविद्या-शिक्षा

जो पदार्थ जिस प्रकार का हो, उसको उसी प्रकार जानने का नाम ज्ञान है । सत्यार्थ प्रकाश-समु. ७ पृ. १८९

जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे । वह 'विद्या' और जिससे तत्त्वस्वरूप न जान पड़े, अन्य में अन्य बुद्धि होवे, वह 'अविद्या' कहाती है । सत्यार्थ प्रकाश- समु. ९, पृ. २३२

जिसका जैसा गुण, कर्म, स्वभाव हो, उस पदार्थ को वैसा ही जानकर मानना ही ज्ञान और विज्ञान कहाता है और उससे उल्टा 'अज्ञान' । सत्यार्थ प्रकाश- समु. ७, पृ. १७६

जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़ के सदा आनन्दित हो सकें वह शिक्षा कहाती है । व्यवहार भानु-पृ.९

जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत् जानकर उससे उपकार लेके अपने और दूसरे के लिए सब सुखों को सिद्ध कर सकें वह विद्या और जिससे पदार्थों के स्वरूप को उल्टा जानकर अपना और पराया अनुपकार कर लेवें वह अविद्या कहाती है । व्यवहार भानु-पृ.९

जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियादि की बढ़ती होवे और अविद्या दोष छूटें, उसे शिक्षा कहते हैं । सत्यार्थ प्रकाश-स्वमन्तव्यान्तव्य प्रकाश, पृ.५६३

विद्या का महत्व

जब तक विद्या से सत्य पदार्थ नहीं जानता, तब तक अभिमान करता हुआ पशु के समान विचरता है । ऋ. १/१६४/३७

दो उपाय विद्या की प्राप्ति के लिए जानने चाहिए । उसमें प्रथम उपाय यह है कि विद्या का अध्यापक यथार्थवक्ता होवे तथा सुनने और पढ़ने वाला पवित्र, कपटरहित और पुरूषार्थी होवे । दूसरा उपाय है कि श्रेष्ठ विद्वानों का कर्म देखकर आप भी वैसा ही कर्म करे । ऐसा करने में सबको विद्या का लाभ होवे । ऋ. ५/३०/३

गुरू तो माता पिता, आचार्य और अतिथि होते हैं । उनकी सेवा करनी, उनसे विद्या-शिक्षा लेनी-देनी, शिष्य और गुरू का काम है। सत्यार्थ प्रकाश-११,पृ. ३२६

मनुष्य का नेत्र विद्या ही है । बिना विद्या शिक्षा के ज्ञान नहीं होता । जो बाल्यावस्था से उत्तम शिक्षा पाते हैं, वे ही मनुष्य और विद्वान् होते हैं । जिनको कुसंग है, वे दुष्ट, पापी, महामूर्ख होकर बड़े दुख पाते हैं । इसीलिए ज्ञान को विशेष कहा है कि जो जानता है वही मानता है । सत्यार्थ प्रकाश-समु.११,पृ.३८९

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ २२ का शेष भाग .....

पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री वी.जी. खेर अध्यक्ष सभा, श्री जगदीश मित्र कुमार उपाध्यक्ष, श्री अमरनाथ शर्मा आ.स. प्रधान, डा. ईश्वर मुखी सचिव सभा तथा प्राचार्य श्री हरिनखेड़े ।

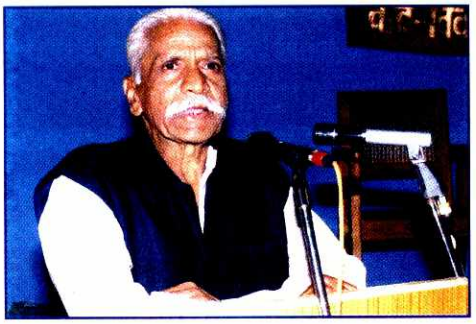

श्री जयसिंह गायकवाड़ अध्यक्षीय भाषण देते हुए ।

जबलपुर–आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय –

जबलपुर में श्रीमति गिरजा बाई गंगाधर राव गायकवाड़ अर्न्तशालेय वेदमंत्र/श्लोक पाठ चलित शील्ड प्रतियोगिता दि. 28.11.13 को सम्पन्न हुई । कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जयसिंह गायकवाड़ द्वारा की गई । प्रतियोगिता में 17 प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुतियां दी ।

विजेता शाला सेंट नार्बट उ.मा. विद्यालय तथा उपविजेता आर्य कन्या उ.मा. विद्यालय रहीं । प्रथम पुरस्कार कु. मनीषा तिवारी (सेंट नार्वट) तथा द्वितीय पुरस्कार कु. शिवा दुबे (आ.क. वि.) को प्राप्त हुए ।

स्मरणीय है कि श्री जयसिंह गायकवाड़ द्वारा अपनी माताजी की स्मृति में ये पुरस्कार रखे गए हैं ।

अध्यक्षीय भाषण में श्री गायकवाड़ द्वारा विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत तथा संस्कृति को सुरक्षित रखने के प्रयासों के लिए प्रंशसा व्यक्त की गई तथा आर्य विद्या सभा को प्रतियोगिता संचालित करने के लिए धन्यवाद दिया । संचालन शिक्षक सचिव श्री आशीष द्विवेदी ने किया तथा आभार प्रदर्शन शाला के प्राचार्य श्री योगेन्द्र पाल हरिनखेड़े ने किया । सभा में श्री हृदय स्वरूप गुप्ता, श्री अशोक नेहरा, श्री पीयूष शर्मा, श्रीमती शकुन्तला पाठक आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही ।

www.thearyasamaj.org

प्रति, _____

_____

पृष्ठ २१ का शेष भाग .....

दिल्ली सरकार की माननीय मुख्यमंत्री एवं एकादमी की अध्यक्ष श्रीमती शीला दीक्षित ने अपने उद्‌गार प्रगट करते हुए कहा "संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है । इसको सम्मानित स्थान प्रदान करने की आवश्यकता है । अकादमी इसके लिए प्रयत्नशील है तथा विभिन्न योजनाओं पर कार्य चल रहा है ।" एक संस्कृत विश्व विद्यालय की स्थापना से संस्कृत का कार्य आगे बढ़ सकेगा ।

दिल्ली सरकार की शिक्षा, भाषा, समाज कल्याण विभागों की मंत्री माननीय किरण वालिया ने अपने विचार प्रगट करते हुए कहा "युवा पीढ़ी को इस कार्य से जोड़ा जाए । सरकार इस सम्बंध में हर सम्भव प्रयास कर रही है । आपने घोषणा की कि एवं विशाल एवं सर्वसाधन सम्पन्न संस्कृत पुस्तकालय की शीघ्र ही स्थापना की जाएगी । इस पुस्तकालय का नाम पं. उमाशंकर दीक्षित होगा ।"

सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन के सचिव प्रो. रूपकिशोर शास्त्री ने प्रतिष्ठान के द्वारा संस्कृत क प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे छात्रों का उल्लेख किया । वेद विद्यालयों की स्थापना के साथ यह कार्य आगे बढ़ रहा है । प्रतिष्ठान इनकी स्थापना के लिए प्रोत्साहन प्रदान कर रहा है । यह स्मरणी है कि डा. रूपकिशोर जी शास्त्री प्रसिद्ध आर्य विद्वान हैं । वे गुरूकुल वि.वि. कांगड़ी हरिद्वार से डेयुटेशन में प्रतिष्ठान में कार्यरत हैं ।

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलाधिपति डॉ. श्री मुकुन्दकम शर्मा द्वारा संस्कृत चैनल प्रारम्भ करने के लिए प्रयास करने का सुझाव दिया ।

अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार द्वारा अकादमी द्वारा किए जा रहे कार्यों का उल्लेख करते हुए बताया गया कि इस सम्मेलन में देश विदेश के विद्वानों द्वारा प्रासंगिक 735 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए हैं । आपने भविष्य की योजनाओं की जानकारी भी प्रस्तुत की ।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि सांसद जनार्दन वाघमारे ने कहा कि विश्व साहित्य में संस्कृत का साहित्य श्रेष्ठ रत्न के समान है । इस तथ्य को पाश्चात्य मनीषियों ने स्वीकार किया है । व्याकरण एवं ध्वनि शास्त्र की दृष्टि में भी संस्कृत विश्व में उन्नत भाषा है ।

न्यायमूर्ति श्रीधर सिरपुरकर ने कहा कि सांस्कृतिक एकता के लिए आधुनिक वैज्ञानिकों के साथ मिल कर इसे प्रासंगिक बनाया जाना चाहिए ।

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने कहा कि संस्कृत के उत्थान में ही मनुष्य का कल्याण है । एमिटी विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति डॉ. अशोक चौहान ने बताया कि इस वि.वि. में संस्कृत खोल दिया गया है संस्कृत के माध्यम से भारत को विश्व शक्ति बनाया जा रहा है । दिल्ली विश्व विद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश भारद्वाज तथा राज्य सभा सांसद श्री आनन्द भास्कर आदि ने भी सम्बोधित किया गया ।

आर्य समाज को विद्वान सन्यासी स्वा. प्रणवानन्द जी ने आशीर्वचन प्रदान किए । यह स्मरण रखने की बात है कि अकादमी की क्रिया कलापों में स्वामी जी के साथ डॉ. धर्मपाल जी तथा डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जी का योगदान महत्वपूर्ण है ।

अकादमी की उपाध्यक्षा प्रो. शशिकुमार द्वारा संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों का उल्लेख करते हुए समागत अतिथियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई ।

प्रकाशक : प्रा. अनिल शर्मा, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा,
मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर, फोन: 0712-2595556 द्वारा उक्त सभा के लिए प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : आर्य प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर, फोन : 0761-4035487